



# बरनम वन

शेवसपियर के मकवेथ का पद्यानुवाद

रघुवीर सहाय



राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली पटना

प्रथम प्रस्तुति 38 नवम्बर 1979, रंगमण्डल, राष्ट्रीय  
नाट्य विद्यालय, खुला रंगमंच, रवींद्र भवन, नयी दिल्ली,  
निर्देशक ध्वकारत, आवरण चित्र मकवेय की भूमिका  
मे के के रना, छायाकार सुरेन्द्र राजन

इस अनुवाद को अंशतः अथवा पूर्णतः खेलेने के लिए  
अनुवादक को लिखित अनुमति लेना आवश्यक है

मूल्य रु 18 00

रघुवीर सहाय

प्रथम संस्करण 1980

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड  
8, नताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली 110002

मुद्रक अजय प्रिंटर्स,  
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

BARNAM VAN

Hindi translation in verse of Shakespeare's  
MACBETH by Raghuvir Sahay  
Rs 18 00

विमलेश्वरी सहाय को,  
परीक्षा की घड़ियों में  
जिनके सहयोग के लिए  
चिर-कृतज्ञ हूँ



मकदप व० व० रना



मकदप व० व० रना



परिवारिका अमिता मिश्र मकवय पल्ली उत्तर वावकर







मैत्रेय के० के० रैना बाकी वीरेन्द्र राजदान, मन्वथ पत्नी उत्तरा वाक्कर



तीन विचित्र बहने मधुमालती, अनिला सिंह डाली अहलूवालिया



## प्रस्तावना

यह अनुवाद करना मेरे लिए एक रचनात्मक अनुभव था। अंग्रेजी में शेक्सपियर के नाटकों का मूल आधार भाषा है और वह आवाज के उतार चढ़ाव को अभिनय के लिए इस्तेमाल करती है। इसीलिए भीतरी और बाहरी दोनों घटनाओं के अनुसार वह बढ़ती, ठिठकती, मुड़ती और घूमती चलती है। हिंदी में मैंने कवित्त छंद चुना जिसमें हर मात्रिक छंद की अपेक्षा आवाज के अभिनय की कहीं अधिक सम्भावना है और जो एकाधिक एवं विविध रागस्थितियों के अनुकूल ढल सकता है। आरम्भ में, और एक दो स्थलों पर अत्र, मात्रिक छंद का सीमित प्रयोग किया गया है परंतु वह भी नाटकीय कारणों से, मंकवेश पत्नी के प्रलाप का दृश्य जो मूल में गद्य में है तथा अत्र जो स्थल गद्य में हैं उन्हें गद्य में ही रहन दिया है। मूलकम मंकडफ सवाद का दृश्य पद्य के स्थान पर गद्य में परंतु उसका शेषांश पद्य में कर दिया है क्योंकि मेरी समझ में उगी तरह वह अधिक प्रभावशाली होता। शेष नाटक मूल के अनुसार पद्य में ही है। शेक्सपियर की भाषा कहीं कहीं इतनी सरल है कि मानो अपने युग के घाडम्वर के बीच वह रचनात्मक अद्वितीयता की एक चमक हो। ऐसे स्थलों पर अनुवाद मूल जैसी सरल भाषा में रहे, यह आवश्यक जान पड़ा। किंतु जिन स्थलों पर नाटककार की भाषा क्लिष्ट, जटिल या घाडम्वरमयी है और जहाँ उसका एक नाटकीय उद्देश्य है वहाँ उसकी रक्षा वसी ही भाषा में करने का प्रयत्न किया है। कुछ स्थल अवश्य ऐसे हैं जहाँ शेक्सपियर मेरी समझ में अकारण ही विलम्बित और दुर्लभ होते हैं या फिर आज के रंगमंच पर उतना स्पष्टीकरण आवश्यक नहीं

जितना वह करते हैं, वही उनका अनुकरण नहीं किया है।

इस तरह यह अनुवाद प्रायः प्रत्येक पंक्ति का अनुवाद है किन्तु वास्तव में यह पंक्तियों का नहीं, वाक्यों की आवाज का अनुकरण करना है और यही गुज पदा करने की कोशिश करता है जो एलिजाबेथ-युग के मंच पर होती रही होगी।

मैंने मैक्मिश और बरनम यन तथा उसके बाह्य जन को भुंग्य मानकर स्वाटलैण्ड और द्वागलण्ड के राजवशगन और देगमालपरक सभी मदम छोड़ दिये हैं। इसी तरह शेक्सपियर की भाषा में जहाँ जहाँ अत्यन्त स्थानीय पहचान के प्रसंग आते हैं—जैसे डाइना व एनाथिब दुश्मा में जो कि तत्कालीन पिताच विद्या से आश्रित हैं—वही यही उन्हें छोड़ या बदल दिया है। पात्रों के नाम यथावत् रखते हुए भी क्या का सावजनीन बनाना चाहिए और सप्रयास देशीकरण तो नहीं हो किया है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रगमण्डन के लिए भारतजी ने जब मुझे इस अनुवाद का काम सौंपा था तब हम दोनों जानते थे कि मधुगान शैली का प्रयोग करने में नाटक के कुछ दृश्यों का फिर से सम्पादन करना होगा। इसीलिए मैंने सम्पादन का काम अनुवाद के समय में ही किया गया ताकि मधुगान शैली का निर्देशन धारा अनुभावा के अनुसार दुर्घटितान में परिवर्तन करने को, और यही नहीं बल्कि भी निर्देशन भविष्य में इस अनुवाद का यथावधानी या अन्य किसी भी शैली में प्रस्तुत करने का स्वतंत्र रहे। अनुवाद की प्रक्रिया में समय समय पर निर्देशन में परामर्श उपयोगी रहा और अन्त्य के समय भी विभिन्न कमियाँ का पकड़ा और दूर किया जा सका, जिससे लिए मैं निर्देशन और रगमण्डली का धाधारी हूँ। प्रथम प्रयोग के बाद अनुवाद का एक बार फिर परिमाजित किया जिसमें श्री गी वात्स्यायन और श्री सोडर सूत्र के वट्टमूल्य सुभाष का महोत्सव मिमा दृश्यों लिए मैं उनका भी कृतज्ञ हूँ। पुस्तक की पाठ्यविधि संवार करने में मेरी पुत्री हमा गहायन विशेष गहायना की, वह उत्तेज करता भी शुभ प्रीतिकर होता।

रघुवीर सह्याय

## निर्देशकीय

किसी भी निर्देशक के लिए शेक्सपियर एक आदरमूलक भय और एक चुनीती का भाव पैदा करता है। मैं भी इसका अपवाद नहीं हूँ। किन्तु विनम्र और समर्पित भाव से शेक्सपियर को छुआ जाये तो नयी नयी सम्भावनाएँ स्वयमेव खुलने लगती हैं। काफी पहले कर्नाटक के ही एक निर्देशक बंधु ने मुझे कथावली में हैमलेट करने के लिए प्रेरित किया था। किन्तु कथावली एक मुद्रा प्रधान एवं इतनी शास्त्रीय शैली है कि उसकी जटिलताओं में उलभकर प्रस्तुति के अत्यन्त दुरुह होने की आशंका बनी रहती है। अतः मैंने कथावली के बजाय यक्षगान को चुना जिसमें उक्त गति एवं प्रबल नाटकीयता है। शेक्सपियर को उसी के देश की नाट्य शैली में प्रस्तुत करने में मैं स्वयं को सक्षम नहीं मानता। और यदि वही शैली अपनाऊँ तो मुझे लगेगा कि मैं भूठ बोल रहा हूँ। अतः यक्षगान का प्रयोग मात्र प्रयोग के लिए नहीं बल्कि अपनी विश्वसनीयता बनाय रखने के लिए किया गया है। शेक्सपियर की त्रासदिया में और विशेषकर मैक्बेथ में जो धीर, रौद्र, भय, अद्भुत, वरुण आदि रस प्रचुर माना में मौजूद हैं वे सावभौमिक तो हैं ही किन्तु अपनी अतिमानवीय स्थितियाँ और चरित्रों के कारण यक्षगान के सन्दर्भ में मुझे अत्यन्त निकट के लगते हैं। नाटक में चरित्रों का प्रवेश प्रस्थान, युद्ध एवं भावनात्मक तनावों को शरीर, गति और हाव भाव आदि के माध्यम से प्रदर्शित करने का विशेष गुण यक्षगान ने विकसित किया है। इस प्रस्तुति में यक्षगान में मैक्बेथ नहीं अपितु मैक्बेथ में यक्षगान के तत्त्वा का प्रयोग किया गया है।

मैकवेय का कथ्य मेरी दृष्टि में प्रबल महत्वाकांक्षाओं का असीम जगत है जिसमें से बाहर निकलना किसी के लिए भी सहज नहीं। इसीलिए इस प्रस्तुति का नाम बरनम वन है। हम स्वयं अपने लिए डाइना का निर्माण कर लेते हैं, दुःस्वप्नों के रहस्यमय ससार में भटकते हैं और व्यथाओं के अधकार में घिर जाते हैं। किंतु दुःखद होते हुए भी यह यात्रा दिलचस्प है क्योंकि महत्वाकांक्षा की इस यात्रा में आदिम मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं का आत्मीय परिचय मिलता है।

इस प्रस्तुति में संगीत का आधार यक्षगान ही है किंतु अपने पूर्ण एवं शुद्ध रूप में नहीं। अनुवाद में कविता छंद का प्रयोग हुआ है जिसकी गति यक्षगान के प्रमुख वाद्य चण्डा की गति से पूर्णरूपेण मेल खाती है। शुद्ध यक्षगान का संगीत एवं वाद्य अपने क्षेत्र में सुपरिचित एवं लोकप्रिय है किंतु इनसे अपरिचित देशों के लिए इनकी एकरमता बोझिल न हो इसीलिए एशियाई वाद्यों तथा घण्टियों, गाय आदि का प्रयोग भी किया है। यक्षगान के लगभग सभी चरित्र पौराणिक चरित्र हैं और प्रत्येक चरित्र की अपनी विशेष भूपा से एक पहचान है। अतः इस प्रस्तुति में यक्षगान के वेश प्रयोग न करके बाली, जापान, फम्बाजिया, बर्मा, इन्दोनेशिया आदि एशियाई देशों की विभिन्न रंग परम्पराओं से वेशभूषा की प्रेरणा ली गयी है।

नाटक के अनुवाद को रघुवीर सहाय ने यक्षगान के लिए किसी प्रकार से सीमित नहीं किया है, वह मूल के समानांतर पूर्ण है और किसी भी णी में प्रस्तुत किया जा सकता है।

ब ब कारत

## मंच पर

डाइनें मधुमालती, अनिला सिंह, डाली अहलूवालिया, चर जी पी नामदेव, डकन (स्काटलण्ड नरेश) अनग देसाई, मराकम, डोनालवेन (डकन पुत्र) पवज कपूर, रघुवीर यादव, लेनोवस विजय वश्यप, रोस वसन्त जोसलकर, एगस इब्राल मेहदी, मकडफ राजेश विवेक, मैक्वय के के रैना, बांकी बीरेद्र राजदान, मकरेथ पत्नी उत्तरा वाक्कर, परिचारिकाएँ अमिता मिश्रा, नूतन सूय, हत्यारे प्रेम मटियानी, बागीशकुमार सिंह, अनग देसाई, फिलयास अमिताभ श्रीवास्तव, सामंत जी पी नामदेव अशोक निशेप, इब्राल मेहदी, हनुमान प्रसाद, प्रेत बागीशकुमार सिंह इब्राल मेहदी, हनुमान प्रसाद, अमिता मिश्रा, विजय वश्यप, वसन्त जोसलकर, अशोक निशेप, बागीशकुमार सिंह, रघुवीर यादव, अनग देसाई अमिताभ श्रीवास्तव, गुरुचरण बेदी, चिकित्सक अशोक निशेप, धाई अमिता मिश्रा, सनिक गुरुचरण बेदी, राघेश्याम, रमेशचंद्र, योद्धा प्रेम मटियानी

## नेपथ्य मे

मंच परिकल्पना, वस्त्रविन्यास तथा रगापकरण रोविन दास, सहायक मंच परिकल्पना वसन्त जोसलकर, अंगोन निशेप, मंच निर्माण तरसीमलाल वमा, दिक्षीपचंद, सहायक वस्त्रविन्यास उपा बैनर्जी, अमिता मिश्रा नूतन सूय बागीशकुमार सिंह, कर्णसिंह, रगापकरण सहायक रघुवीर यादव, डाली अहलूवालिया, ई जान शॉ, चुनीलाल, प्रकाश परिकल्पना ती एम मराठे, सहायक सुरेखा सीकरी, राघेश्याम, संगीत सहयोगी ज्ञान शिवपुरी, कोरस उपा बैनर्जी, नूतन सूय, मनमोहन, नामदेव वाद्यवाद एम श्रीधर हवार, बी बालकृष्ण, के देवदास राव, प्रदीप दत्त, रूप सज्जा इंदु घोष, प्रचार व्यवस्था सुरेखा सीकरी, रजीत कपूर, मंच व्यवस्था प्रेम मटियानी, सहायक अनिला सिंह











## अंक 1 दृश्य 2

शिकिर मे । नपथ्य म दु-दुभि । सम्राट डक्कन,  
मलकम, डोनालवेन लेनाक्स और अनुचरों का  
प्रवेश । एक लहलुहान सैनिक स मिलत है ।

- डक्कन      कौन है यह ? उत्तरजित देह की दुदशा इसकी बोलती है  
कि यह अवगत है नयी विद्रोह की गति स ।
- मलकम      यह वही है वीर जो निमग्न अथक  
मरे लिए आद्यत लडता रहा  
बन्धु आओ,  
छोडकर रण चले जब तुम कहो तब का हाल  
राजा से
- सैनिक      अनिश्चित थी विजय,  
जैस दो थके तराव लिपटे ह। परस्पर  
तर पात नही हो  
राजद्रोही पक्ष का नेता बुटिल है  
क्रूरताएँ सम्पुजित हैं बुद्धि मे उसकी  
संयबल है  
भाग्यदेवी अक म बँटी हुई है रक्षिता सी

किन्तु सब कम है  
 बहादुर मैकबेथ ललकार भागे बड़ा  
 धुम्राँ उठने लगा उसके दुधारे पर  
 शत्रु के ताजे रुधिर से  
 घसा भी उस नीच के सामन पहुँचा  
 कुछ न बोला  
 नाभि से बक्ष तक उसकी चीरकर रख दिया  
 सिर प्राचीर पर लटका दिया प्रभुवर  
 डकन बाह उत्तम वीर  
 सैनिक ज्यो जहाँ से मूय उगता है, वही से फूटते हैं भयकर तूफान  
 त्या जहाँ से स्वस्ति आती है वही से भ्लेश आता है  
 सुनो, राजा सुनो  
 शीघ्र भ था सत्य का बल  
 शत्रुदल के पाव उखड़े  
 तभी राजा नावें ने कुमुद भेजी  
 पुन हमला हुआ  
 डकन किन्तु मेरे शूरनायक मैकबेथ, बाँको न पिछड़े !  
 सैनिक कहीं गौरैया गरुड का, बाघ को खरहा डराता है ?  
 दोगुने धल से किया प्रतिघात दोनों ने  
 क्षोणितस्नान करना चाहते थे वे कि थे दुहरा रहे  
 बलिदान ईसा का  
 कह नहीं सकता  
 मगर ठहरो, घाव मेरे खुल रह हैं  
 डकन शब्द तेरे सोहते हैं तुझे जैसे घाव तेरे  
 सुवृत्त दोनों हैं  
 इसे ले जाओ, चिकित्सा करो

सैनिक को कोई प्रभुवर से जाता है । रोस और  
 एगस का प्रवेश

बोन आता है ?  
 मलकम रोस का सामन्त

सेनापति      कितना ध्येय है यह  
 रोस      जय हो  
 डकन      वहाँ होकर आ रह हो रोम  
 रोस      फाईफ से महाराज  
          वहाँ नावों की पताका गगन का अपमान करती थी  
          वहाँ स्वेनो नावोंपति विपुल दलबल संग  
          द्रोही पतित कांडर की मदद से युद्ध करना था  
          अन्ततः प्रत्यक्ष भानर मैक्वेथ ने  
          भात पर प्रतिभात दे देकर निरन्तर  
          धका डाला भाततापी, विजयश्री पायी  
 डकन      भ्राता, भानन्द  
 रोस      स्वेनो गिडगिडाता है  
          मगर हम उसे अपने खेत सन्निव  
          दफन करने नहीं देंगे  
          जब तलक घर नहीं देगा स्वर्णमुद्रा दस हजार  
 डकन      अब धीर नहीं धोखा देगा वह कांडर का मामलत हमें  
          घोषणा करो उसके वध की  
          उसकी पदवी से करो मैक्वेथ को भूषित  
 रोस      यही करता हूँ  
 डकन      कांडर ने जो खोया है वह पाया भद्र मैक्वेथ ने

## अंक 1 दृश्य 3

उजाड़, गरज, तीनों डाइनों का प्रवेश

- डाइन 1 कहा रही बहिनी  
 डाइन 2 सूझर मार गयी रही  
 डाइन-3 तू कहाँ रहती  
 डाइन 1 ठेकेदारा का सरनार  
 उसकी झोरत ठस्सदार  
 बोछा भरके चना चमेना  
 चपात रही चबर चबर चबर चबर  
 हम कहा हमहूँ के द ना  
 तो छिनार कहन है चल चुईल छूमतर  
 मैं जाऊँगी राजभवन म
- डाइन 2, 3 जाओ बहिनी  
 डाइन-2 घरे एमी मत माँगी सबकी सब नवटे हो जायेंगे  
 डक नवट को भाग करके सब नविया करके मायेंगे  
 नवटा पर राज कर नवटा परजा नवटी राजा नवटा  
 बारी बारी स सब नवटा वो नवट राज तिलायेंगे
- डाइन 3 सुनो नगारा सबबेथ पधारा



सब तीनो डाइन सुबह म बसेरा कर  
 रात होने पे जगल का फेरा कर  
 कौमा मूते स्यार नहाये  
 भौंधी हँडिया मुतिया खाये  
 भगडमवगडम लखरलवार  
 फटफटाग जन्तर तँमार

### मकबेथ और बांको का प्रवेश

मकबेथ आज का जसा दिन जिसम रुपहली धूप भी है और मनहूस धुंध भी,  
 पहले कभी नहीं देखा ।

बांको फोरेस कितनी दूर होगा ? कौन है य ?  
 जिनका भेष भौघड और रूप बीहड है  
 जो धरती के जीव नहीं लगते किन्तु हैं इसी धरती पर  
 बोलो ! क्या मनुष्यो से बोलते हो तुम ?  
 सुन पा रहे हो तुम क्योंकि तुम तीनों ने अपनी  
 भुरायी उँगली सूखे ओठ पर रखी  
 तुम औरत होगी पर तुम्हारी सूरत यह नहीं कहती

मकबेथ बोलो, जीभ हो तो, कि कौन हो

डाइन-1 जयतु मैकबेथ जय ग्लेमिस के राजपुत्र

डाइन-2 जयतु मैकबेथ जय काडर के राजपुत्र

डाइन 3 जयतु मैकबेथ जयतु राजा मैकबेथ होगा

बांको मैकबेथ, तुम काँप क्यों गये ? भयभीत से क्या हो जबकि  
 ये शब्द सुखदायक हैं ?

ह ईश्वर

तुम माया हो कि वही हो जो तुम्हारी काया है ?

मेर थोष्ट बाधु की तुमने प्रशस्ति की

राजयोग उसको बताया भविष्य म

और वह मात्रमुग्ध सुनता है

पर मुझसे तुम नहीं बोलती

दिव्यदृष्टि स तुम भविष्य का अज्ञान लेख देख यदि सकती हो

वह सक्ती हो कि कौन बीज भँवुरायेगा कौन नहीं  
तो मुझसे बोलो  
मुझे कोप का न भय है न चाह अनुकम्पा की

डाइन 1 जय

डाइन-2 जय

डाइन 3 जय

डाइन-1 मैकवेथ सूनतर श्री फिर भी महत्तर  
उतना प्रसन्न नहीं फिर भी प्रसन्नतर

तुमसे उत्पन्न पुत्र होंगे नप, तू नहीं  
एवमस्तु, जय जय जय मैकवेथ, बाको

बाको, मैकवेथ, जय जय जय

मकवेथ ठहरा अधूरी है बात अभी, और कहे  
पिता के न रहने पर ग्लेमिस का राजपुत्र मैं दुःखा, सही है  
काडर का कसे कि तु जब कि काडर का राजपुत्र फलता फूलता है ?  
और राजा का पद तो असम्भव है  
तुम वहाँ से यह अजब जानकारी लायी हो  
और क्यों उत्तर के इस पथ पर रोक्कर  
हमको दिखाती हो लेखा प्रारब्ध का ?  
उत्तर दो ?

डाइन सोप हो जाती हैं

बाको धरती में बुलबुले होन हैं जमे पानी में हैं और य वही तो हैं  
कहा गयी ?

मकवेथ लोप हुई व्योम में जो दिखती देह थी  
फूक सी समीर में बिला गयी  
रहती कुछ और दर

बाको क्या जिनकी बात हम करत हैं वे कोई सचमुच थी ?  
या कि बावलीबूटी खाकर हतबुद्धि हो गये हैं हम ?

मकवेथ तुमसे उत्पन्न होयेंगे नप

बाको तुम नप होंगे

मकवेथ काडरसामन्त भी नहीं कहा था उसन ?

बाकी ठीक यही शब्द थे यही अर्थ । कौन है ?

### रोस और एगस का प्रवेश

- रोस    डकन की जानकर तुम्हारा जयसवाद ह्य है  
विश्रम तुम्हारा विद्रोह दमन करने म  
इतना विलक्षण है कि राजा अभी आश्चय करता है  
और अभी आशसा  
नाबों की कठिन शत्रुपत्ति मध्य  
मृत्यु के विविध चित्र आँक रहे थे जब तुम निरातक  
ताँता बंध गया था चरो का तब  
प्रत्यक साता था एक और विजय का समाचार
- एगस    हम भेजे गय है कि राजा की ओर से तुम्हें धन्यवाद दें  
और ले जायें दरबार म सादर
- रोस    और जो तुम्हारा पारितोषिक है उसके अग्रिम स्वरूप  
मुझको आदेश है कि तुम्हें  
काठर का राजपुत्र कहा जाय  
परमयोग्य राजपुत्र धारो यह भलवार  
क्याकि यह तुम्हारा है
- बाकी    भरे ! क्या प्रेतात्मा न सच कहा था ?
- मकवय    काठर का राजपुत्र जीवित है, क्या यह आभूषण पराया  
पहनात हो ?
- एगस    राजपुत्र जो था वह जीता तो अब भी है  
किंतु भाग्य के कठोर चक्र के अधीन  
उसे अपन प्राण भारी हैं  
मिलीभगत उसकी नाबों से थी  
या घर का भेदी या  
या दोनों विधि स वह देगदुदगा का कारण बना  
मैं नहीं जानता  
तो भी उस पापी का राजद्रोह के बदले  
निश्चित है गिरोन्दे

मकबेथ स्वगत

ग्लेमिस था अब हुआ काडर, धेष्ठतर फल क्षेप है

रोस और एगस स

तुम आय, बण्ट किया, धयवाद

बाँकी स

पुत्र अब तुम्हारे राजा होंग । क्यों ? नहीं ?

क्योंकि जो काडर का राज्य मुझे दे गये, उनकी यह  
वाणी थी

बाँकी सम्भव है तुमको राजत्व मिले असदिग्ध  
किंतु यह विचित्र है कि सघकार के अनुचर  
कभी कभी कैसे तुभाते है सब के टुकड़े दे कर  
और फिर नहीं वे हम नहीं रहते  
होता है सवनाश

रोस और एगस स

भाई, एक बात है

व उसकी ओर भात है

मकबेथ स्वगत

दो सत्य कह गये, भगनावरण है ये

प्रकट

धयवाद भद्रगण

स्वगत

मानव से प्रबल कोई गतिर्यां बुलाती है

यह अनुभव शुभ नहीं हो सकता, अशुभ नहीं हो सकता

यदि यह अशुभ है तो क्या अभी अभी मैंने  
यह प्रमाण पाया है ?

कांडर का राजपुत्र आज ही बना हूँ मैं  
शुभ है तो क्यों मन में वह विचार उपजा है  
जिसके सोचे से कलेजा मुँह को आये  
वर्तमान के भय से भीषणतर है भविष्य  
हत्या की कल्पना बोरी कल्पना ही है  
पर क्यों वह झुकझोर जाती है दुबल मन  
सशय कर देता है कमहीन  
जो है, निस्तार है

बाकी देखो, वह ध्यान में डूबा है

मकवेथ स्वगत

देवयोग दे सकता है यदि राजत्व मुझे  
तो वही माथे पर मुकुट धरा सकता है मेरे कुछ किये बिना  
बाकी यह जो उपाधि नयी पायी है नये वस्त्र जैसी है  
जो कि बदन पर बैठेगा बरते जाने स

मकवेथ स्वगत

होना है जो, हो  
घड़ी प्रहर सब बीत रहे हैं घोर विपन्न दिन में से होकर  
बाकी श्रेष्ठ मैकवेथ, हम ठहरे हैं

मकवेथ बुरा न मानो यका हुआ मन मेरा  
मूली बिसरी बातों में खोया था । प्रिय स्नेहता, तुम प्रतिफल  
मानस में बसते हो  
चलो, नपति के पास चलें

जो हुआ सहज वह गुनं अनंतर समय गय  
कुछ खुलकर इस बात पर करेंगे

बाकी बड़े हृष से

मकवेथ तब फिर आज यही तब

आयो मित्री

वे जात हैं

## अंक 1 दृश्य 4

फोरेस, राजमहल का बमरा डकन, मलकम,  
डोनातवेन, लेनाक्स और अनुचरों का प्रवेश

- डकन      बाडर का शिरोच्छेद हो गया ?  
            फिरे नहीं अभी अधिक ?
- मलकम    महाराज, अभी नहीं  
            किंतु मैंने आखा देखा वृत्तांत जाना है  
            उसने स्वीकार किया राजद्रोह  
            मागा फिर प्राणदान, पछताया  
            उसके जीवन में था प्राणत्याग ही सबसे पूण बम  
            सहज मरा  
            जसे कि अभ्यास नाटक में किये था
- डकन      बेहरे पर पड़ा जाय अंतर का अभिप्राय  
            ऐसी विद्या कोई नहीं बनी  
            भद्र पुरष वह था  
            मैंने उस पर अविवल बिदवास किया

मकबध, बाको, रोस और एगस का प्रवेश ।

मकबब स

ह सज्जन बाधु, अश्रुतन है मैं  
कितनी भी अनुशसा कितन भी पुरस्कार  
तुम पर मैं बार दू  
श्रेय जो तुम्हारा है ये उमस कम हाथि  
मकबब मैं तो कतव्य बर आप श्रुतवृत्य है  
प्रभुवर हमारा काम आपका प्रिय है  
आपकी प्रतिष्ठा की, प्रेम की  
राज्यसिंहासन की रक्षा ही धम है  
डकन इधर आधी  
मैं तुमको सीचूंगा तुम सहलहाभोग

बाका स

तेजस्वी बाबा, कोई कम नहीं है तुम्हारी सिद्धि  
स्याति भी न कोई कम पामोग  
आभा मैं हृदय लगा लू तुमको  
बाका हृदय लगू तो भी मैं अपित है चरणो मे  
डकन मेरा आनंद अश्रुमो मे अवगुण्ठित है  
आत्मीयो सुना, सुनो  
उत्तराधिकार आज दता है  
ज्यण्ट पुत्र मेलकम को  
कम्बर का युवराज आज से कहो उसको  
उसके सम्मान से बही नहीं, सभी गौरवावित हो  
अब हम इनवर्नेस को प्रस्थान करते हैं  
ताकि हम तुम्हारे कुछ और निकट आ जायें  
मकबब ऐसा विश्राम जो कि आपकी न सेवा हो, व्यय परिश्रम ही है  
इसलिए आज्ञा दें मैं स्वयं जाऊँ  
श्री आपके शुभागमन से अपनी पत्नी को अवगत कर  
उसको प्रसन्न करूँ  
डकन प्रिय काडर

मकजध स्वगत

बम्बर का युवराज माय म मेरे बाधा  
क्या सीढ़ी के इस जीन का साथ सक्ंगा ?  
नक्षत्रा, झालोव छिपा लो  
भासित मत हान दा मरी गूढ कुटिल महदाकाक्षाएँ  
भनदेखी बर लेन दा भाव को हाथ की  
हीन दा जो भाति देगन म डरती है, हो जाने दा

प्रस्थान

ढकन वीर है मह पुरुष बावो भद्र भी है  
घोर उसके वचन मरी आत्मा का वृत्त करत है  
चलो हम भी चलें  
भगवानो करेगा मैवचय  
उत्तम स्वजन है

प्रस्थान



## अंक 1 दृश्य 5

इनबर्नेस मकबध के किले के सामने । मकबध  
की पत्नी का पत्र पढ़त हुए प्रवेश

पत्नी “भेरी विजय के दिन के मुझसे मिली और मैं आश्चर्य है कि जो  
मनुष्य को अज्ञात है उसे जानने की शक्ति उनमें है । मैं कुछ  
और पूछने को व्याकुल था कि वे तूय बनकर तोप हो गयी ।  
चकित मैं खड़ा था कि राजा का दूत आता है और मुझे काडर  
का राजपुत्र कहकर पुकारता है, जैसे थोड़ी देर पहले तीनों  
विचित्र बहना ने पुकारा था और कहा था कि आगामी काल में  
मैं राजा होऊँगा । मैंने यह समाचार तुम्हें लिख भेजा है क्योंकि  
तू मेरे आग्योदय की समिती है प्रियतम और इसलिए कि तू  
अपनी उन्नति के आश्वासन से अनजान उसके आनन्द से वंचित  
न रह जाये । इसे अपने मन में रख, सुखी रह ।  
ग्लेमिस तो तू है और काडर हो गया है  
और जो भविष्यवाणी हुई है, वह भी तू होगा  
फिर भी मुझे तेरे स्वभाव से डर है  
उसमें इतनी बरणा है कि वह  
लक्ष्य को दबोच नहीं सकता है

तू गौरवन्मोलुप है  
 तुझमें महदावाक्षा कम नहीं  
 हाँ, उस कौटिल्य को कमी है जो उसे सिद्ध करता है  
 चाहेगा जिसको तू व्याकुल हो  
 वह अभीष्ट चाहेगा कि घम स प्राप्त हो  
 बपट करेगा नहीं  
 फिर भी तू अनधिकार चाहेगा जीतना  
 महाभाग ग्लेमिस  
 चाहेगा तू तो वह पायगा  
 वह जा पुकार रहा है एमा वर मैकवथ  
 वह जिम्मे वरन से डरता है अधिक तू  
 और चाहता है कम कि काम वह हो नहीं  
 आ, यहाँ आ, तेरे कानों में  
 मैं अपनी आत्मा उडेल दूँ  
 और मेरे शब्द, व मोहजाल बाट दूँ जो तुझे  
 राजमुकुट पाने से रोके हैं  
 राजमुकुट, जिसे भाग्यदवी शक्ति स मिलकर  
 तेरे सर धरने को आतुर है

### चर का प्रवेश

क्या समाचार है  
 चर महाराज आज रात यही पधारेंगे  
 पत्नी पागल हो गया है तू  
 तेरे स्वामी क्या राजा के साथ नहीं हैं ?  
 होत तो आयोजन करने को कहलाते  
 चर एमा ही कहा है अभी दूत आया है हाफता  
 इतना ही वह सका उसडे गले से वह  
 पत्नी उसका उपचार करो, वह भगल सवाद लाया है

चर जाता है

बीमा भी फटे मुर से सूचित करता है  
 डकन का अतिम आगमन मेरे दुग मे  
 नैसर्गिक शक्तियाँ, जो मन मे उपजाती हैं विचार  
 आयें, हर ले जायें मेरा स्त्रीत्व, मुझे सर से नागून तक  
 निष्ठुर बबरता से भर जायें, गाढा कर जायें रघिर  
 रूँध जायें कण्ठा की धमनिया पछताना यदि चाहें  
 ताकि नीच निश्चय स विचलित न हो सकू  
 आयें अदृश्य प्रेत जो कि वही उत्पात करते हा  
 मेरे स्तन दुह दूध ले जायें दे जायें गरल, घनी रात आयें  
 धुंध नक की गाड़ी अपने पर ओढ़ ले  
 कि मेरी पंनी छुरी घाव नहीं दल पाम जो कि वह करती हो  
 देवता न भाँव सक कहकर ठहरो ठहरो

### मकबेय का प्रवेश

ग्लेमिस महान, महाभाग काउर  
 इन दोनों से गुस्तर पद के अनन्तर अधिकारी  
 तेरे पन्ना ने मुझे अज्ञानी वतमान के पार पहुँचा दिया है  
 मैं भविष्य का अभी अनुभव कर मनती हूँ  
 प्रियतमे डकन यहा आज रात आयेगा  
 और कब जायेगा ?  
 कल का विचार है  
 कभी नहीं हावेगा उस कल का सूर्योदय  
 राजपुत्र, तेरा चेहरा एक कागज है  
 जिस पर लिखे रहस्य पढ़े जा सकत हैं  
 समय को छलने के लिए तू समय के समान दिख  
 आँखा मे, हाथा मे, बोली मे, स्वागत हो  
 पुष्प सा अबोध बन, हो उसमे छिपा साँप  
 आग-तुल का करना होगा ही इतजाम  
 आज रात जो करना है मुझ पर छोड़ दे  
 इसके बाद हर दिन हर रात हमारा होगा निर्विवाद बचस्व  
 परामश करेंगे

मकबेय

पत्नी    तब तक दिस निर्विकार  
जिससे सदेह न हो  
बाकी मैं देखूगी

प्रस्थान

बौघा भी फटे सूर से सूचित करता है  
 डवन का अन्तिम आगमन मेरे दुग म  
 नैसर्गिक गतिधारा, जो मन म उपजाती है विचार  
 आयें, हर ले जायें मेरा स्त्रीत्व, मुझे सर से नाखून तक  
 निष्ठुर बबरता से भर जायें, गाढा कर जायें रधिर  
 रूध जायें बग्घा की घमनिर्घा पछताना यदि चाहूँ  
 ताकि नीच निश्चय से विचलित न हो सकूँ  
 आयें अदृश्य प्रेत जो कि कहीं उत्पात करत हा  
 मेरे स्तन दुह दूध ले जायें द जायें गरल, धनी रात आय  
 घुघ नक की गाढी अपने पर ओढ़ ले  
 कि मेरी पैनी छुरी घाव नहीं देख पाय जो कि वह करती हो  
 देवता न भाव मर्क कहकर ठहरो ठहरो

### मकवेथ का प्रवेश

ग्लेमिस महान, महाभाग बाउर  
 इन दोनों से गुस्तर पद के अनन्तर अधिकारी  
 तेरे पत्रा ने मुझे अज्ञानी वतमान के पार पहुँचा दिया है  
 मैं भविष्य का अभी अनुभव कर सनती हूँ  
 मकवेथ प्रियतमे, डकन यहा आज रात आवेगा  
 पत्नी और कब जायगा ?  
 मकवेथ कल का विचार है  
 पत्नी कभी नहीं होवेगा उस कल का भूयोदय  
 राजपुत्र तेरा चेहरा एक कागज है  
 जिस पर लिखे रहस्य पढे जा सकते हैं  
 समय को छलने के लिए तू समय के ममान दिल  
 आँखा म, हाथा मे, बोली में स्वागत हो  
 पुष्प सा अबोध बन, हो उसमे छिपा साँप  
 आग-तुल का करना होगा हो इतजाम  
 आज रात जो करना है मुझ पर छोड़ दे  
 इसवे बाद हर दिन हर रात हमारा होगा निर्विवाद बचस्व  
 मकवेथ परामश करेंगे

पत्नी    तब तक दिख निर्विकार  
जिससे सन्देह न हो  
बाकी मैं देखूंगी

प्रस्थान

## अंक 1 दृश्य 6

इनबर्नेस के किले के सामने मशाल, डकन, मलकम,  
डोनालबन, बांको, लेनाक्स, मकडफ, रोस, एगस  
और अनुचरों का प्रवेश

डकन    दुग यह मनोरम है शीतल समीर मन्द मन मोहे लेता है  
बांको    वासन्ती सूचना देती हुई गौरैया  
          घर जहाँ बनाती है वहाँ वायु  
          कितनी स्वच्छ स्निग्ध हो जाती है  
          यह मैंने कई बार देखा है

मकबेय-पत्नी का प्रवेश

माधो माननीया  
प्रेम कभी कभी बड़ा अर  
फिर भी उस प्रेम का कृ  
इसका यह अर्थ है कि  
तुमको जो कष्ट दिया  
ईद        कहो, हमें उसका  
          हमको

पत्नी      आपने विगत में उदार अनुकम्पाएँ की वस्तुतः  
 वतमान में भोली भर दी सम्मान से  
 इसकी तुलना में हमारा सबस्व  
 यदि सेवा में अर्पित हो तो भी यथेष्ट नहीं  
 आप दीर्घायु हों

डकन      काँडर में राजपुत्र कहाँ है  
 हम पीछे पीछे थे  
 हमने पथ में चाहा हम आगे जा निकलें  
 उनका मुहरा बनें  
 पर वह शहसवार हैं  
 और उनका तीव्र प्रेम, एड लगा  
 उनको हमसे पहले अपने घर ले आया  
 देवी, हम पाहुन हैं आज तुम्हारे घर के

पत्नी      हम सबक साधारण  
 अपना सब सब अपने, अपनी का अपना सब  
 आपकी धरोहर है

डकन      दो अपना हाथ और ले चलो आतिथेय के समीप  
 वह मेरा परम स्नेहपात्र है  
 हमारी कृपादृष्टि उस पर रहेगी  
 अनुमति हो,

चुम्बन करता है । प्रस्थान



## अंक 1 दृश्य 6

इनवर्नेस के किल के सामन मशालें, डकन, मलकम,  
डोनालबन बांको सेनावस, मकडफ, रोस, एगस  
और अनुचरों का प्रवेश

डकन    दुग यह मनोरम है शीतल समीर भद मन मोह लेता है  
बाको    वासती सूचना देती हुई गौरैया  
          घर जहाँ बनाती है वहाँ वायु  
          कितनी स्वच्छ स्निग्ध हो जाती है  
          यह मैंने कई बार देखा है

मकबेथ परती का प्रवेश

आओ माननीया  
प्रेम कभी कभी बड़ा अत्याचार करता है  
फिर भी उस प्रेम का वृत्तज्ञ होता हूँ मैं  
इसका यह अर्थ है कि आज यहाँ आ करके  
तुमको जी कष्ट दिया  
ईश्वर से कहो, हमें उसका पुरस्कार दे  
और तुम भी दो हमको धन्यवाद

- पत्नी    आपने बिगत में उदार अनुकम्पाएँ की वरसल  
 वतमान में झौली भर दी सम्मान से  
 इसकी तुलना में हमारा सबस्व  
 यदि सेवा में अर्पित हो तो भी मधेष्ट नहीं  
 आप दीर्घायु हो
- डकन    काडर के राजपुत्र वहाँ हैं  
 हम पीछे पीछे थे  
 हमन पथ में चाहा हम आगे जा निकलें  
 उनका मुहरा बनें  
 पर वह सहसवार है  
 और उनका तीव्र प्रेम, एड लगा  
 उनको हमसे पहले अपने घर ले आया  
 देवी, हम पाहुन हैं आज तुम्हारे घर में
- पत्नी    हम सेवक साधारण  
 अपना सब सब अपन, अपनों का अपना सब  
 आपकी धरोहर है
- डकन    दो अपना हाथ और ले चलो आतिथेय के समीप  
 वह मेरा परम स्नेहपात्र है  
 हमारी कृपादृष्टि उस पर रहेगी  
 अनुमति हो

चुम्बन करता है । प्रस्थान

## अंक 1 दृश्य 7

मकबेथ के किले का आँगन । बायीं ओर दक्षिण का द्वार है, एक द्वार दायीं ओर कमरों में खुलता है । इन दोनों के मध्य एक बरोठा है जिससे पीछे एक ओर द्वार दिखता है । द्वार खुला हो तो ऊपर जाने का जोना भी दिखेगा । इसके सामने दीवाल से लगी एक मंज ओर बच है । मशातची ओर तश्त रिया लिये हुए सबक मच के बार पार भात जातें हैं । जब वे दायीं दरवाजा खोलत हैं, भीतर खाने पीनेवालों का शोर सुन पडता है । मकबेथ का दायें द्वार स प्रवेश

मकबेथ    यदि मुझे निश्चय ही करना है वह काम  
ठीक उस समय जबकि करना है  
तो जल्दी करना ही ठीक है  
यदि हत्या अपने दुष्परिणाम ढाँक ले  
और उसके भरते ही फलदायक सिद्ध हो  
जो है, जो होना है, इसी समय चोट एक  
दोनों समेट ले

तो शायद यही, यही काल के किनारे  
 हम यही इसी दलदल में रह  
 और पार उतर जायें  
 किन्तु जानते हैं हम, बच नहीं सकते हैं दण्ड से  
 हिंसा की शिक्षा लौटकर  
 अपने शिक्षक को ही शिक्षित करती है ।  
 समदर्शी याप का हाथ  
 हमारी विषमय मदिरा का ले करके पात्र  
 लगा देता है ओठ से हमारे ही  
 डकन को यहा मेरा दोहरा संरक्षण है  
 एक तो प्रजा और सम्बन्धी है  
 अतः मुझे दोनों विधि  
 १ उसकी हत्या क विरुद्ध होना चाहिए  
 दूजे हूँ आतिथेय,  
 मुझे उचित है कि बंद कर दूँ घर के कपाट जो घातक आता हो  
 कि स्वयं बच सकूँ  
 यो भी डकन इतना सौम्य है  
 सत्ता या करके भी निष्कलक  
 उसके गुण देवदूत जैसे पावन स्वर में  
 हत्या का पातक धिक्कारेंगे  
 और घणा के घुमड़े अघड के ऊपर अम्बर में उड़ती कम्पा  
 शिगुबदना, मृदु, सुन्दर  
 या कि धामु के अदृश्य अश्व पर सवार स्वगदूत स्वयं  
 जन जन की आत्मा में उस भीषण दृश्य को गड़ा देंगे  
 ऐसे कि जब आँसू बरसोंगे, पी लेंगे आँधियाँ  
 अपने सबल्य के छोड़ को एह नहीं लगा पा रहा हूँ मैं  
 वस, मेरी लिप्ता है जा छलाँग भरने का करतब दिखाती है  
 पर अपन छोडे की पीठ पर नहीं गिरती

अकथन-रत्नी का प्रवचन

कीन ? तू ? तू कैम ?

- पत्नी उसका ब्यालू पूरा होने ही थाता है,  
तू चला क्या आया ?
- मकबेय क्या उसने मुझको बुलाया है
- पत्नी तू नहीं जानता कि हाँ बुलाया है ?
- मकबेय अब हम इस काय मे और नहीं रत होंगे  
उसने सम्मान दिया है मुझे  
औ' मैने भाँति भाँति के सोगा से आसता पायी  
इसको तो नयी दीप्ति से करके बन जाना है मेरा भलकार  
हो जाना है नहीं इतनी जल्दी विनष्ट
- पत्नी लालसा कि जिससे रूप तूने सजाया था  
क्या शराब मे धुत थी ? क्या वह तो गयी थी ?  
कि अब जब वह जागी है  
बुझी बुझी बीमार आत्मा से  
अपनी पस्ती पर पछताती है  
मैं अब यह समझी हूँ कि यही तेरा प्यार है  
क्या तू उतना ही पराक्रमी होने से डरता है  
जितना तू लाभी है ?  
चाहता रहेगा तू वह जिसको  
जीवन का मानता परमघन है  
औ' अपनी ही आँखो मे कायर बनकर जियेगा तू  
उस बिलार की तरह जो मछली ताकती राडी रहती है तटपर  
पानी मे भसने का साहस नहीं करती ?
- मकबेय बस बस, अब बस भी कर  
कर सकता हूँ वह जा मदों का पाम हो  
इससे अधिक करे वह मनुष्य है नहीं
- पत्नी तो वह कौन पशु था जिसने मुझको  
तेरा मनोरथ बतलाया था ? वह तू ही था  
और तब तू मनुष्य था  
और अगर अब से कुछ और आने जायगा  
तो मनुष्य ही होगा और अधिक  
जब न जगह निश्चित थी औ' न समय  
दोनों ही तुझको जुटाने थे

भव वे आप ही आप भान जुटे हैं यहाँ  
 और इस अनुकूलता से तू भवराया है  
 मैं पिता चुकी हूँ दूध  
 और जानती हूँ प्यार भाँचल मे वैसे उमड़ता है  
 पर गोदी मे पड़े इकट्ठे निहारते  
 दुधमुँहे के मुँह से मैं छुड़ा लेती स्तन  
 पटक कर वपार फोड़ डालती  
 अगर कोई प्रण ऐसा किये हुए होती तेरी तरह

मकबेथ

पत्नी

यदि असफल हम रहे ?

असफल हम ?

अपने साहस को तू चाँपे रह उसी ठौर

तो हम हागे न विफल

डकन सीता होगा

क्यों नहीं ? दिनभर की यवन उस सुला चुकी होगी

उसके दो रक्षक हैं

दोना की मद्यमास से मैं परितृप्त कर

प्रज्ञा की ग्रहरी स्मृति धमायित कर दूगी

जडमति मस्तिष्क मुण्डमात्र रह जायगा

जब सूअर से सोते लुजतुजे मृतप्राय वे होंगे

तब मैं भी तू मिलकर

क्या नहीं कर सकते असुरक्षित डकन का ?

कौन दोष धुत रक्षक पर धर नहीं सकते ?

क्याकि वही होंगे अभियुक्त

मेरे तरे अपराध के

मकबेथ

तू केवल पुरपा का प्रसव कर

तेरी कठोर धातु मद ही गड़ेगी और कुछ नहीं

लोग नहीं समझेंगे क्या यह

जब डकन के कक्ष में सोते उन दोनों पर

रक्त हथ लगा देंगे, उनके ही छूरे हम बरतेंगे

यह कि वह उहनि किया ?

पत्नी

इसके अतिरिक्त और क्या कोई

कहने का साहस कर पायगा

क्याकि हम हाहाकार करते हुए  
 डबन की मृत्यु पर थिलपेंगे  
 मकबय मन मेरा स्थिर है अब मैं दृढसकल्प हूँ  
 अपने सब अवयव सलग्न कर  
 कृत्य यह भयकरतम साधूगा  
 जा, रचा भानन्द, जिससे सब छले जायें  
 चोर चेहरा वह छिपा ले जो हृदय में चार है

दोनों कमर के भीतर चल जात हैं

## दूसरा अंक





## अंक 2 दृश्य 1

वही स्थान एक दो घण्टे बाद । पीछे के द्वार से  
बाँको और पिलयाँस का मशालची के साथ प्रवेश ।  
वे द्वार खुला छोड़कर आगे आत हैं

बाँको    कितनी रात गयी होगी बेटे ?  
पिल०    चाद डूबता है मैंने घड़ी नहीं सुनी  
बाँको    और चाद चारह बजे डूबता है  
पिल०    गायद कुछ और बाद  
बाँको    लो यह तलवार सम्हालो  
          स्वर्ग में किरायतगारी हो रही है बत्तिया बुझा करके  
          यह भी लो

पटी उतारकर कटार देता है

नींद मेरी पलका पर बंठी है  
पर मैं उसे भीतर न आने दूँगा

देवता दयालु हो

मुझमें उन भयकारी दृश्या का मत जगायें

जो कि नींद आने पर जगत हैं ।

मेरी तलवार दो, कौन है ?

मकबय का मशालची के साथ दाय द्वार से प्रवेश

मकबय    भिय

बांको    कौन तुम ? सोये नहीं ? राजा सोता है  
वह बेहद खुश था, उसने बहुतरे उपहार बाट हैं  
और यह एक हीरा तुम्हारी स्त्री के लिए भेजा है  
अपने सत्कार से सुख पाकर  
अनुपम सतोष में मीठी नींद सो जाने के पहले

मकबय    हम प्रस्तुत नहीं थे

इच्छा अशक्यता की अधीन हो गयी  
अथवा मनोबुद्धि सेवा हम कर पाते

बांको    नहीं, सब ठीक रहा

कल रात मैंने तीनो डाइनें सपन में देखी थी  
तुमका तो मैं कुछ सच करने दिखता चुकी

मकबय    मैं उनकी बात नहीं सोचता

तो भी जब एक घड़ी का समय पायेंगे  
उस वारे में बातें करके बितायेंगे  
यदि तुम चाहोगे तो

बांको    जब भी तुम कहो

मकबय    साय यदि दोग समय पर तुम तो गौरव पाओगे

बांको    हा, गौरववृद्धि से मेरी कुछ क्षति नहीं  
यदि मन निष्पाप और मित्रता निश्छल हो

मकबय    अच्छा, तब सुख से तो

बांको    धर्मवाद ओ तुम भी

बांको और फिलयांस अपने कमरे में चले जाते हैं

मकवेय जाग्रो,  
 अपनी स्वामिनी से कहो  
 जब मेरा पेय तैयार हो, घण्टे पर चोट दें  
 और तुम जाकर सो

मशालची का प्रस्थान । मकवेय मेज पर बैठता है

बूझा यह बटार है जो मुझे दिखती है ?  
 मूठ मेरी ओर है, आ तुझे उठा लू  
 हाथ मे नहीं आयी फिर भी वहीं रखी है  
 अपशकुन, क्या तू सिफ दृष्टि की पकड़ में आता है  
 हाथ की नहीं ?  
 या तू सिफ माया है मेरे उद्विग्न मानस से उपजी हुई ?  
 मैं देख रहा हूँ तुझे उसी ठोस रूप में  
 जिसमें यह है कि जिसे मैंने छोड़ा है  
 तू मुझे वहीं लिये जाती है जहाँ मैं जाता था  
 ओ तेरे ही समान मेरा हथियार होता  
 या बाकी इन्द्रियाँ मिल करके आखा को ठगती हैं  
 या आत्मा ने ही शक्ति सबकी हड़प ली है  
 तू वहीं स्थिर है  
 ओ तेरे फल पर तरे हृत्थे पर खून के घन्घ है  
 जो पहले नहीं थे  
 नहीं, नहीं, कुछ नहीं  
 यह मेरी वासना है जो रूप धरती है  
 आधा विश्व इस समय मुर्दे सा पड़ा है  
 और सुखद सजो पर नींद के भयानक स्वप्न जागत है  
 प्रेत ओ पिशाच रंगेलियाँ मनात हैं  
 मौत अपने प्रहरी ध्वान की पुकार सुन  
 चकित और चौकन्ती  
 बड़े बड़े ढग भरती दवे पाव आगे को बढ़ती है  
 दूढ़ धरती, मत सुन आहट मेरी  
 जान मत कि पाव मेरे किस ओर जात है  
 कही पाव तले कोई पत्थर बोल देगा ता

इस क्षण का घातक सहसा लो जायेगा  
जो कि इस क्षण का गृधर है

घण्टा बजता है

मैं जाता हूँ और करता हूँ कृत्य  
डकन, यह ध्वनि मत सुन  
क्योंकि यह गुहार है बाल की  
तेरे लिए स्वर्ग से या नरक से

पीछे के द्वार से जाता है और एक एक कर सीढ़ियाँ  
चढ़ता है । विराम

## अंक 2 दृश्य 2

मकबध पत्नी का हाथ में प्याला लिये दाय द्वार  
से प्रवेश

पत्नी वह जिसने उह पस्त कर दिया  
मुझे ढीठ कर गयी  
प्यास बुझी उनमें आग मुझमें दहक गयी  
शांत शांत, सुनने दो  
उल्लू का झट्टहास था  
यह पहचाना है मनहूस रात का  
बकश, बाम पर अपना लगा हुआ  
द्वार खुले हुए है  
छा पीकर अलसाय रक्षक के खुरांटे  
अपन वस्तव्य का उपहास करते हैं  
उनके प्याला में वह मैंने मिलाया है  
कि जीवन मरण अब बहस कर रहे हैं  
वे मरे या कि जीते हैं

मकबध नेपथ्य से  
कौन है मरे ! मरे !

पत्नी हाथ धावद वे जाग गये  
 और काम नहीं हुआ  
 कोशिश भर होना और काम नहीं हो पाना  
 घोर असमजस है  
 शात शात,  
 मैंने दानो की कटारे वहाँ रख दी थी  
 मैक्वेथ की दृष्टि से बची नहीं रही होगी  
 उसमे भरे सोत हुए बूढ़े बाप का  
 उनहार अगर नहीं होता  
 तो मैं स्वयं कर चुकी होती काम  
 तू मैक्वेथ ।

वह पलटती है और मैक्वेथ बाप हाथ मे दो कटार  
 लिये दिखायी देता है

मैक्वेथ मैंन काम कर दिया, तूने कोई शोर सुना ?  
 पत्नी हा, सुना, उल्लू की हसी और भीगुर का रोना  
 क्या तू भी बोला था ?  
 मैक्वेथ कब ?  
 पत्नी अभी  
 मैक्वेथ जब कि मैं उतरा ?  
 पत्नी हा  
 मैक्वेथ सुनने दो

वे सुनत हैं

चीन सोया है वहाँ दूमरे प्रकोष्ठ मे —  
 पत्नी उमके दीना बटे

मैक्वेथ हाथ भाग चडाकर  
 यह भयानक दृश्य है

पत्नी मृगता है भयानक कहता इमे  
 मकबध एव सोते म हँसा था और एव चीगा 'तून  
 जिससे दोना जग पडे, मैं खडा मुनन लगा  
 पर दोना ने प्राथना की और मो गय  
 एव न कहा ईस्वर रक्षा कर, 'एवमस्तु' दजे ने  
 मानो दोना न मुझे रेंगे हाथा देता हो  
 मुनता रहा वह नही पाया मैं 'एवमस्तु'  
 जब वह बोला था कि 'ईस्वर रक्षा करे'  
 पत्नी इस पर मत सोच इतना  
 मकबध किस कारण मेरे मुह म नही निक्का 'एवमस्तु'  
 ईस्वर की रक्षा का योग्य पात्र मैं ही था  
 और 'एवमस्तु' भरे कण्ठ म रूँघ गया  
 पत्नी इन बातो पर इस तरह नही मोचत  
 पागल हो जायेंगे  
 मकबध मुझे लगा मैं न मुनी कोई एव आराज  
 'नीद अब न आयेगी  
 मैकबध ने नीद का तून कर डाला'  
 भोली नीद  
 नीद जा चिन्ता की गाँठें मुलभाती है  
 हर दिन का अन्त  
 धके धम का जो स्नान है  
 विक्षत मन का मरहम, प्रकृति का धम है  
 जीवन के भोज का रसमय अनुपान है  
 पत्नी क्या कह रहा है तू ?  
 मकबध चीत्कार गुंजा था घर भर मे  
 नीद अब न आयेगी  
 ग्लेमिस ने नीद का बध किया  
 इसलिए काडर न सायगा  
 मैकबध अब और नही सायेगा  
 पत्नी किसका चीत्कार था ?  
 परमश्रेष्ठ राजपुत्र  
 क्यों अपनी ग्लानि से अपना पराक्रम क्षय करता है ?



जा, थोड़ा पानी ला  
 और हाथ से कुत्सित यह प्रमाण धो डाल  
 क्यों ले आया तू वहाँ स कटारें ये /  
 इनकी जगह वहीं है  
 जा, इ-हे ले जा  
 और सोते सबको पर लोहू पोत दे  
 मकबेय अब मैं न जाऊँगा  
 सोचकर कि मैंने क्या कर डाला डरता हूँ  
 उसका दुबारा देखने का साहस नहीं  
 पत्नी सक्लपटीन  
 मुझे दे कटारें  
 सोये और मुर्दा जड़ हाते हैं चित्रवत्  
 शिशु डरा करते हैं भूत के मुखौटो से  
 यदि उसमे खून हुआ तो मैं रक्षका के मुह रंग दूँगी  
 क्योंकि यह उ-ही का किया प्रकट होना चाहिए ।

वह जाती है । छटखटाहट सुनायी पड़ती है

मकबेय यह खडका कौसा है ? मुझको क्या हुआ है ?  
 हर आहट डराती है  
 ये मेरे हाथ है, और ! नोच लेंगे ये आँखा को  
 क्या साता मि-धु धो सकेंगे इनका लोहू ?  
 नहीं, महासागर रंग जायेंगे  
 हरे अतल कर देगा मेरा यह हाथ साल

मकबेय-पत्नी आती है

पत्नी मेरे भी हाथ रंगे हैं जैसे तेरे हैं  
 पर मेरा खून तेरा जैसा सफेद नहीं

छटखटाहट

खड्गन मुन पड़ती है दक्षिण के द्वार पर

सोट घटें हम अपना बंधन को  
 छोड़े पानी से भुल जायगी यह बरनी  
 सब बाह्ये को बिता ?  
 दुःखता न छोड़ दिया है तरा साध

छटछटाहट

गुन, फिर राखना  
 जा बपड़े रात के बदन से कि शायद  
 हमको उठकर घाना हो  
 मा उपेक्षुन म मत खोया रह

जाती है

भक्तवेष      अपनी बरनी के सम्मुख भाऊ  
 दसम बहतर है गुण अपनी बिसार दूँ

छटछटाहट

ठकन को जगामो बिबाड पीट पीटकर  
 अगर जमा पामा तो

प्रस्थान

## अंक 2 दृश्य 3

खटखटाहट की आवाज बढ़ती जाती है। एक शराबी दरवान का प्रवेश

दरवान कोई शायद खटखटा रहा है। हाँ, खटखटा ही रहा है। कोई अगर नक का दरवान होता तो उसकी जिदगी ताले में घड़ी घड़ी चाभी घुमाते कटती

खटखटाहट

खटखटाओ, खूब खटखटाओ।  
 कृपा से आपका बोट नाम तो होगा।  
 खोरी खोरी घने वि महगाई  
 फसत भट्ठी हूँ घट  
 डाँतकर घन बर २ घ  
 दबाव में देभाव ५

की

खटखटा

खटखटा, खूब खटखटा

तो मतलब है जिसके एक मुह है मगर जवान दो हैं और जिनमें एक दिल के साथ दगा तो बहुत किया मगर दूसरे में मन्त्री न बन सका। आम्हो भाई पलटू ठीक है, जब दिल बदला तो दिल बदला

### छटखटाहट

छटखटाहटो, छटखटाहटो, छटखटाहटो, कौन भाई कौन है ? यह कोई मिलावटी है जिनमें असल में नकल की इतनी मिलावट की कि असल की पहचान उन बिस्तर गयी और यहाँ तक में आ पहुँचा। फिर छटखट ! कोई दम भी न ले ? अरे भाई, हो कौन ? यहाँ इतनी ठण्ड है कि कौरव का अग्निकुण्ड यहाँ हो नहीं सकता और मैं भी अब नरक का दरवान नहीं बनता। सोचा था, सब धधेवाजा के थोड़े थोड़े नमून गुला लेंगे क्योंकि सबकी उन्नति का माग यहाँ की आता है

### छटखटाहट

ठहरिए, ठहरिए, अभी आया। ज़रा दरवान का भी स्थाल रखिएगा, प्रभु !

फाटक खोलता है, मकडफ और लतावस आत है

- मकडफ      कहो बंधु, क्या कल बड़ी रात गय उत्सव पूरा हुआ जो तुम इतनी देर सोते रह गये ?
- दरवान      जी हाँ, हम भोर तक पीते पिलाते रहे और आप जानते ही है कि शराब में अवगुण तीन तीन हैं।
- मकडफ      सो भला क्या हैं ?
- दरवान      लीजिए सुनिए एक, आँखें लाल करे, दूसरे नींद लाय, तीसरे पेशाब लाय। लम्पटता, मालिक, वह बढ़ाती भी है और घटाती भी है क्योंकि वह काम तो जगाती है मगर काम लायक नहीं रखती। शराब की अति मानो लम्पट से दलबदल करती है—उसको बनाती है उसको मिटाती है, उसका चढ़ाती है उसको गिराती है, उसको उकसाती है उसको दबाती है कहेन का मतलब

## अंक 2 दृश्य 3

खटखटाहट की आवाज बढ़ती जाती है। एक शराबी दरवान का प्रवेश

दरवान कोई शायद खटखटा रहा है। हा, खटखटा ही रहा है। कोई अगर नक का दरवान होता तो उसकी जिंदगी ताले में घड़ी घड़ी चाभी घुमात कटती

खटखटाहट

खटखटाम्रो, खूब खटखटाम्रो। अरे कौन है भाई ? ईश्वर की कृपा से आपका कोई नाम तो होगा। यह एक व्यापारी है जिसने चोरी चोरी बने भर लिये कि महगाई में अपना घर भरे। मगर फल अच्छी हुई और दाम घट गये और यह गले में फासी डालकर चल बसे। आम्रो भाई आवताव के भगत। यहाँ तो अभाव में वेभाव की पड़ेगी

खटखटाहट

खटखटाम्रो, खूब खटखटाम्रो। अरे भाई कौन है ? हे ईश्वर, यह

तो मतबदल है जिसके एक मुह है मगर जबान दो है और जिसने एक दल के साथ दगा तो बहुत किया मगर दूसरे में मन्त्री न बन सका । आगो भाई पलटू, ठीक है, जब दिल बदला तो दल बदला

### खटखटाहट

खटखटाओ, खटखटाओ, खटखटाओ, कौन भाई, कौन है ? यह कोई मिलावटी है जिम्मे असल में नकल की इतनी मिलावट की कि असल की पहचान उसे बिसर गयी और यहाँ नर्व में आ पहुँचा । फिर खटखट ! कोई दम भी न ले ? अरे भाई, हो कौन ? यहाँ इतनी ठण्ड है कि कौरव का अग्निकुण्ड यहाँ हो नहीं सकता और मैं भी अब नरक का दरवान नहीं बनता । सोचा था, सब धधेवाजों के थोड़े थोड़े नमूने बुला लेंगे क्योंकि सबकी उन्नति का माग यही को आता है

### खटखटाहट

ठहरिए, ठहरिए, अभी आया । जरा दरवान का भी रशाल रखिएगा, प्रभु !

फाटक खोलता है, मकड़फ और लेनाकम आन हैं

- मकड़फ      बहो बाधु, क्या कल बड़ी रात गये उत्सव पूरा हुआ जो तुम इतनी देर सोते रह गये ?
- दरवान      जी हा, हम भोर तक पीते पिलाते रहे और आप जानते ही है कि गराब में अन्नगुण तीन तीन हैं ।
- मकड़फ      सो भला क्या हैं ?
- दरवान      लीजिए सुनिए एक, आखें लाल करे, दूसरे नींद नाये, तीसरे पेशाब लाये । लम्पटता, मालिक, वह बढाती भी है और घटाती भी है क्योंकि वह काम तो जगाती है मगर काम लायक नहीं रखती । शराब की अति मानो लम्पट से दलबदल करती है— उसको बनाती है उसको मिटाती है, उसका चढाती है उसको गिराती है उसको उक्साती है उसको दबाती है कहन का मतलब

है कि उसे खड़ा करती है और बिठा देती है और फिर सोते में  
 दगा देकर चारा खाने चित्त कर चल देती है  
 मकडफ मुझे दीखता है शराब ने तुझे भी बल चारा खान चित्त कर  
 दिया था  
 दरबान जी हाँ, जी हाँ, बल उसने तो मेरा गला ही पकड़ लिया पर मैं  
 उससे तगड़ा पड़ा और हालांकि मेरे पाँव थोड़ी देर को लड़खड़ा  
 गये, आखिर में मैंने उसे उलटकर दम लिया  
 मकडफ क्या तेरे स्वामी की सुबह हुई ?

मकवेध का प्रवेश, रात के कपड़े पहने है

लेनाक्स जग गये वह, ली हमारी खटखटाहट से  
 मकवेध नमस्कार, राजपुत्र  
 मकडफ दोनों को नमस्कार  
 मकवेध क्या नरेग जागे हैं ?  
 मकडफ अभी नहीं  
 मकवेध मुझको बुलाना था और मुझे देर हुई  
 मकवेध मैं उनके पास लिये चलता हूँ  
 मकडफ राजा का सत्कार सुखद बण्ट होगा  
 पर बण्ट तो फिर भी है  
 मकवेध मन का ध्यान द ही तो देह का बण्ट है  
 रास्ता इधर से है  
 मकडफ मैं स्वयं जाता हूँ क्योंकि आदिष्ट हूँ

भीतर जाता है

लेनाक्स प्रस्थान राजा का ध्यान है ?  
 मकवेध हाँ, ऐसा ही तय था  
 लेनाक्स रात बल भयकर थी  
 हम जहाँ सोये थे चिमनिया गिर पड़ी  
 वायु में विलाप और हत्या का चीत्कार सुन पड़ा  
 दुखभरे भविष्य में अनिश्चय की उथलपुथल

और अराजकता की ककदा चेतावनी  
 लम्बी पहाड़ सी रात भर  
 दिया किया उल्लू का अट्टहास  
 कुछ लाग कहते हैं  
 कि पृथ्वी उद्विग्न थी और कंपकंपाती थी  
 मकवथ रात थी भयंकर कल  
 लेनाक्स मेरे युवा मानस में ऐसी किसी और रात की कोई स्मृति नहीं

### मकडफ का प्रवेश

मकडफ	सबनाश, सबनाश ! क्या समझू ? क्या कहूँ ?
मकवथ	क्या हुआ ?
लेनाक्स	
मकडफ	सबनाश खेल गया है अपना खेल अधमतम हत्या ने पिंजरा तोड़कर राजा के प्राणा का पक्षी चुरा लिया
मकवथ	क्या कहा प्राणों का ?
लेनाक्स	राजा के ?
मकडफ	जाग्रो और स्वयं अपनी आँखों को हतसन कर लो दृश्य वह निहारकर और तब स्वयं कहो क्या दखा

### मकवथ और लेनाक्स जाते हैं

जागो, जागो जागो  
 तुमुलनाद करके जगाओ  
 हत्या, हत्या,  
 बाको डोनालवेन, मैलकम, जागो  
 मृत्यु की अनुवृत्ति निद्रा त्यागो  
 साक्षात् मृत्यु को देखो



उठो उठो, जैसे वज्र से फोड़ उठे और  
आम्रो जैसे कि फोड़ प्रेत चलता हो

घण्टे बजते हैं मैकबेथ पत्नी का प्रवेश, रात का  
कपड़े पहने है

पत्नी क्या कारण है कि ये घण्टाघट्ट घण्टे  
सोतो को उठाकर बुला रहे हैं  
बोलो, बोलो  
मैकडफ बल्याणी,  
मैं जो बहूंगा वह, मुनन के योग्य नहीं आपके  
नारी के माना म शब्द वे मर्मतिव होंगे

बाको आध कपड पहने आता है

बाको, बाको, महाराज मारे गध  
पत्नी हाय, हमारे घर में ?  
बाको घर में किसी के हो, महा दुष्टत्व है  
मैकडफ  
मैकबेथ वह दा जा तुमने अभी कहा, वह सच नहीं था  
वह देखने के यदि थोड़ी देर पहले ही  
मैं मर गया होता तो सुग स रहता  
क्योंकि इस क्षण से अब  
जीवन में गध रह नहीं गया  
सबकुछ खिलबाड है  
शील नहीं रह गया, रही न शालीनता

मलकम और डोनालबेन दायें दरवाजा से तेजी से  
आत हैं

डोनालबन क्या कुछ अनिष्ट है ?  
मैकबेथ हाँ, श्री तुम्हारा ही और तुमको पता नहीं

रक्त के प्रवाह का उद्गम, भागम, निष्कार  
 उत्पन्न हो गया है आज कुण्ठित तुम्हारा  
 मकड़फ तुम्हारे पिता भारे गय  
 मतकम हैं । किमये हाया  
 लेनाकस दिसता है, उनके वक्ष के पहरेदारों का काम था  
 हाथ मुह उनके स्वररजित थे  
 उनकी कटारें भी  
 घोर वे वैसी ही खून सनी  
 उनकी तकिया पर थी  
 भीतें उमत्त एकटक घूरती सी थी  
 उनके हाथों वैसे रहता सुरक्षित  
 तब प्राणधन किसी का  
 मकचेय हा, फिर भी शोध का मुझको है पदचात्ताप  
 जो मैंने उनका वध कर डाला  
 मैकड़फ किसलिए ? क्या किया ?  
 मकचेय कौन हो सकता है एक क्षण एक साथ  
 चकित और सहज  
 क्षुब्ध और शांत स्वामिभक्त और निर्विकार ?  
 कोई मनुष्य नहीं  
 मेरा अबाध प्रेम  
 तोड़ तब की बाधा बह निकला  
 यहाँ पड़ा था डकन  
 रजतवर्ण तन पर चित्रित था स्वर्णिम शोणित  
 और खुले घाव मानो काल के प्रवेश को  
 कपाट थे खुले हुए  
 वहाँ, हृत्पारे थे  
 अपने दुष्टृत्य से सराबोर  
 उनके छुरे रक्त से तर थे मूठ तक  
 कौन थमा रहता तब जिसमे भक्ति होती  
 और उसकी अभिव्यक्ति का साहस भी होता  
 पत्नी ओह, मुझे ले जाओ  
 मकड़फ इनकी सम्हालो

मलकम डोनालवेन से

हम चुप क्यों पारे हैं ?

इससे सब मानेंगे कि हम इनसे सहमत हैं

डोनालवेन मलकम से

हम यहाँ अभी कुछ कह भी नहीं सकते

जाने किस विवर से निबलकर हमारा पाल

कब हमें डस ले

दूर वही चले जायें

अभी नहीं उमड़ेंगे माँसू हमारे

मलकम शोक अभी नहीं पिघलेगा

सेबिकाएँ माती हैं

चाको मकवय पत्नी के लिए

इनको सम्हालो

सेबिकाएँ मकवय पत्नी को ले जाती हैं

औ जब हम ढाँक लें अपनी नगी सूरत

जो उधरे होने से दुख पाती है मिलें

और इस जघन्य कृत्य का विद्वेषण करें

ताकि और जान सकें

शका और भय से हैं व्याकुल हम

ईश्वर की छाया में खड़ा हुआ है मैं

पडयत्र के

विश्वासघाती धृणा के विरुद्ध है

मकडफ मैं भी हूँ

सब हम सब हैं

मकवय हम तुरन्त आयें पुरुषोचित अवस्था में

औ फिर एकत्र हो

सब ठीक है

मलकम और डोनालबेन को छोड़ सब भीतर  
जात हैं

मलकम तुम क्या करोगे अब ?  
हम उनकी सगत से दूर रहे  
वृथा शोक झूठो को सुगम है, उनको हो  
में पश्चिम जाता हू

डोनालबेन और मैं पूव को  
अलग अलग हम दोनों और अधिक सुरक्षित है  
आज हम जहाँ है वहाँ चाकू छिपा है मुस्वान मे  
जितना नज़दीक खून है जिसका वह उतना खूनी है

मलकम हत्या का अस्त्र जा कि छूटा है  
अभी अपने ठौर पर नहीं पहुँचा  
और हमे उसवे  
निशाने से बचना ही इष्ट है  
इसलिए अदब लो  
और बिदा के क्षण मे मत विलमो  
द्रुत जाओ  
दुलभ हो दया तो पलायन ही घम है

प्रस्थान

[कुछ सप्ताह बीत जात हैं]

\*



तीसरा अंक



### अंक 3 दृश्य 1

फोरेस क महल का एक सम्मेलन कक्ष बांकी  
का प्रवेश

बांकी तुमने सब पा लिया ग्लेमिस, वाडर, नरेश  
जैसा तुमसे विचित्र बहनें कह गयी थी  
और मुझे शक है कि तुमने यह  
छल से हथियाया है  
फिर भी तुम्हारी वगवद्धि नहीं होगी  
ऐसा ही कहा था  
बल्कि मैं होऊंगा  
अगणित रानाम्रा का प्रजापति  
यदि वे सच कहती हैं  
जैसा मैंकवेय, प्रबटा तेरे प्रसंग में  
तो तेरे ही समान  
मुझकी भी क्या नहीं  
फलदायक सिद्ध हो  
मुझमें आगा जगाये  
लेकिन बस, ठहर जाओ



दुःखभिरादन, मकवध का राजा और पत्नी का  
रागी व रूप म प्रवेश । साथ में लेनावस, रोस  
आदि कई सामान और अनुचर हैं

- मकवध यह रहे हमारे मुख्य अतिथि  
पत्नी हम इन्हें भूल सकत हैं क्या ?  
मकवध है आज रात को महाभाज का आयोजन  
कामना करेंगे हम आपकी उपस्थिति की  
बाको आदेश करें, कतव्य करें  
मकवध क्या आज आपको यात्रा पर भी जाना है ?  
बाको जी, महामाय  
मकवध अच्छा होता यदि परामर्श हम कर सकते गम्भीर भाज  
पर कल होगा  
यात्रा कितनी लम्बी होगी ?  
बाको वम, उतनी जितनी अब से लेकर ध्यालू तक  
हो सकती है  
हा छोड़े यदि थक गय  
घड़ी दो घड़ी देर हो जायेगी  
मकवध भूतना नहीं रात का भोज  
सुनता हूँ डकन वं भेटे करते विदेश में कुप्रचार  
स्वीकार नहीं करत हैं अपना पितृघात  
पर यह सब कल  
जब राजकाज के प्रश्नों पर हम सोचेंगे  
तो विदा रात तक  
साथ जा रहा है पिलयास ?  
बाको जी, महामाय  
अब दर हो रही है हमको  
मकवध भगवान करें छोड़े फुर्तीले और चुस्त साबित हो  
अच्छा, हो सवार लो विदा

बाको जाता है

मकवय प्रत्येक का समय अपना है शाम के सात तक  
तदनन्तर  
संगति का लाभ सुखदतर हो  
इसलिए इष्ट एकान्त हमें

सबसे

प्रभु कृपा करें

सब जात हैं। मकवय और एक सेवक रह जात हैं

मकवय सेवक से

क्या वे जन प्रस्तुत हैं ?

सबक महाराज, वे दोनों ठहरे हैं द्वार पर

मकवय ले आओ सामने

सेवक का प्रस्थान

राजा कहलाने से क्या

राजा होकर सुरक्षित रहना ही श्रेयस्कर है

आओ के प्रति मुझे गहरा सदेह है

और उसके राजसी स्वभाव में कुछ है

जिसका भय है

दुस्साहसी है वह, सवत्पवान है

सावधान भी है श्री' वीर भी

एक वही है जिसके होने से मैं सचमुच डरता हूँ

आत्मा जिसके सम्मुख कुण्ठित हो जाती है

उसने डाइना को फटकारा था

जब राजा कहकर उहाने

प्रथम बार मुझको पुकारा था

और उसने पूछा था अपना अनागत

तब डाइने

दृष्टा भविष्य की हो जस, बोली थी

'तुमसे मित्र होना उपनिषद्  
 यदि मेरा राजमुकुट बेचल इसलिए है  
 कि मर पुत्रा से छीन लिया जाय  
 तो क्या मैंने मरने का जो पापिष्ठ किया  
 बाको सत्तति के लिए ?  
 उनसे ही क्षमागीत करन का यथ किया ?  
 उपजाया बमनस्य अंतर भ वेबल उनके लिए ?  
 बाको के पुत्रा के गिहागन के लिए  
 मैंने अपनी आत्मा द दी गतान को ?  
 ऐसा है तो मेरे भाग्य का  
 तुमसे भी दो दो हाथ पर लूँ मैं  
 कीन है ?

सयक दो हथारों को तजर आता है

अज जाओ द्वार पर,  
 वही रहो जब तब हम न बुनायें

सयक का प्रस्थान

क्या कल ही तुमसे बात हुई थी ?  
 हथारा / हाँ, प्रभुवर, हुई थी ।  
 मकवय तो क्या तुमने मेरे गद्दा पर मनन किया ?  
 क्या तुमने माना  
 कि दुर्दिन का कारण तुम्हारे, अतीत में  
 बाको था, मैं नहीं, जैसा तुम समझे थे ?  
 मैं तो निर्दोष था  
 यही मैंने कहा था उस पिछली गेट में सप्रमाण  
 कैसे तुम छले गये, कैसे सताये गये  
 किसने पड़व-त्र रचा ऐसे  
 कि अल्पबुद्धि भी कोई कह उठता  
 यह बाको ने किया

हत्यारा 1 आपन बताया था

मकबध निश्चय ही, और भी कहा था कुछ  
और आज मेंट का वह ही उद्देश्य है  
क्या तुम इतने बड़े धीरज के धनी हो  
कि जो हुआ है उसको जाने दो  
इतने धर्मात्मा कि ऐसे श्रीमान  
और उसकी सत्तान की कल्याणच्छा करो  
जिसके अयाय ने  
दुगति तुम्हारी की  
निधन तुमको किया ?

हत्यारा-1 महामाय, हम नी मनुष्य ह

मकबध हा, मनुष्य जाति में गिनती तुम्हारी है  
जैसे कि श्वान, शुनक, आखेटक, बूकुर ओ' मृगदन्तक  
कुत्ते की सूची में सभी लिखे हाते हैं  
पर कोई चतुर है शिकारी है कोई  
रखवाला है कोई औ कोई है स्वामिभक्त  
उनके गुणानुसार गृहस्वामी उन्हें  
अलग अलग काम देता है  
वैसे ही नर भी है  
तब यदि नरपत्ति में महत्त्व कुछ तुम्हारा हो  
तो दोनों  
और मैं तुम्हें एक काम ऐसा सौंपूंगा  
जिससे तुम्हारा शत्रु क्षय होगा  
तुम मेरे प्रिय होगे

हत्यारा 2 मैं, प्रभुवर, दुनिया के दुख इतने सह चुका  
इतने भपड़े मैं खा चुका हू कि मैं  
कुछ भी कर गुजरूँगा दुनिया से बदला चुकाने को

हत्यारा 1 मैं भी दुर्भाग्य का मारा भकाहारा हूँ  
मुझको तो चाहिए कोई भी रास्ता,  
या बिगड़ी बन जाय  
या फिर निस्तार मिले जीवन जजाल से

'तुमसे निमृत्त होगा नपतिवश'  
 यदि मेरा राजमुकुट केवल इसलिए है  
 कि मेरे पुत्रों से छीन लिया जाये  
 तो क्या मैंने अपने मन को पापिष्ठ किया  
 बाको सतति के हित ?  
 उनके हित क्षमाशील डक्कन का वध किया ?  
 उपजाया वमनस्य भ्रतर म केवल उनके लिए ?  
 बाको के पुत्रों के सिंहासन के लिए  
 मैंने अपनी आत्मा दे दी गतान को ?  
 ऐसा है तो मेरे भाग्य आ,  
 तुमसे भी दो दो हाथ कर लू मैं  
 कौन है ?

सबक दो हत्यारों को लेकर आता है

अब जाओ द्वार पर,  
 वहाँ रहो जब तक हम न बुलायें

सबक का प्रस्थान

क्या बल ही तुमसे बात हुई थी ?  
 हाँ, प्रभुवर, हुई थी ।  
 तो क्या तुमने मेरे शब्दों पर भ्रमन किया ?  
 क्या तुमने माना  
 कि दुर्दिन का कारण तुम्हारे, भ्रतीत में  
 बाको था, मैं नहीं, जैसा तुम समझे थे ?  
 मैं तो निर्दोष था  
 यही मैंने कहा था उस पिछली मेंट में सप्रमाण  
 कैसे तुम छले गये, कैसे सताये गये  
 किसन पदयत्र रचा ऐसे  
 कि अल्पबुद्धि भी कोई कह उठता  
 यह बाको ने किया'

हत्यारा-1 आपने बताया था

मकबेथ निश्चय ही, और भी कहा था कुछ  
और आज भेंट का वह ही उद्देश्य है  
क्या तुम इतने बड़े धीरज के धनी हो  
कि जो हुआ है उसको जाने दो  
इतने धर्मात्मा कि ऐसे श्रीमान  
और उसकी सत्तान की कल्याणच्छा करो  
जिसके अयाय ने  
दुगति तुम्हारी की  
निधन तुमको किया ?

हत्यारा-1 महामाय, हम भी मनुष्य हैं

मकबेथ हा, मनुष्य जाति में गिनती तुम्हारी है  
जैसे कि श्वान, 'गुनक, आखेटक' कूकुर और 'मृगदशक'  
पुत्तो की सूची में सभी लिखे होते हैं  
पर कोई चतुर है, शिकारी है कोई  
रखवाला है कोई और कोई है स्वामिभक्त  
उनके गुणानुसार गृहस्वामी उन्हें  
अलग अलग काम देता है  
वैसे ही नर भी हैं  
तब यदि नरपत्ति में महत्त्व कुछ तुम्हारा हो  
तो बोलो  
और मैं तुम्हें एक काम ऐसा सौंपूंगा  
जिससे तुम्हारा शत्रु क्षय होगा  
तुम मेरे प्रिय होगे

हत्यारा 2 मैं, प्रभुवर, दुनिया के दुख इतने सह चुका  
इतने थपेड़े मैं खा चुका हूँ कि मैं  
कुछ भी कर गुजरूँगा दुनिया से बदला चुकाने को

हत्यारा 1 मैं भी दुर्भाग्य का मारा यकाहारा हूँ  
मुझको तो चाहिए कोई भी रास्ता,  
या बिगड़ी बन जाये  
या फिर निस्तार मिले जीवन जजाल से

### अंक 3 दृश्य 2

मकचथ पत्नी और एक सेवक का प्रवेश

पत्नी      बाको सभा से गया ?  
 सेवक    हाँ, महिषी, रात फिर आयेगा  
 पत्नी      राजा से कहो जब उनको अवकाश हो,  
             कुछ क्षण मुझे देंगे  
 सेवक    ऐसा ही कहता हूँ  
 पत्नी      सब दिया और कुछ नहीं मिला,  
             वासना मिटी पर शांति नहीं पायी हमन  
             तोड़े से क्या आनन्द मिला  
             इससे तो अच्छा था कि स्वयं टूटे होते

विचारमग्न मकचथ का प्रवेश

ऐसी क्या बात है स्वामी अकेले आप रहते हैं  
 सगिनी कोई यदि है तो मलीनता  
 उपजी उन भावों से जिनको भर जाना था  
 उनके सग सग जिनके बारे में वे हैं  
 जिसका उपाय नहीं, उस पर विचार क्यों -  
 जो हुआ सो हुआ

मकचय कुचना है साँप धो, नहीं मारा  
 वह फन उठाया  
 डरता है पापी मन उससे विपत्त स  
 मब कुछ देह जाय  
 श्री चाहि चाहि मब जाये तोर परसोक म  
 मुझको स्वीकार है  
 डरे डरे क्या सायें हम  
 सोयें तो सपने आयें भयकर  
 श्री' हमको भयभोर दें ?  
 जिह निजी शांति के हित हमने गान्त किया  
 शांत क्यों नहीं हो गय उनके संग हम ?  
 क्या असहाय छटपटाते हैं ?  
 डबन इस जीवन का विपमज्वर भनकर  
 भीठी नोंद सीया है  
 राजद्रोह ने उमका काम या तमाम किया  
 अस्त्र गस्त्र, विष, अथवा बैर अथवा आक्रमण  
 अब उसका और कुछ बिगाड नहीं सकते है  
 पत्नी सम्हलो सम्हलो, स्वामी  
 रुला रुला चेहरा अपना सँवार लो  
 हँसमुख दिखलायी दो  
 अपने अतिथिया के बीच आज  
 मकचय ऐसा ही कहूँगा मैं, प्रियतमे,  
 तुम भी यही करना  
 बाकी की ओर कुछ विशेष दत्तचित्त हो  
 बोली से आँखों से उसको आदर देना  
 हम अभी अरक्षित हैं इसलिए मुखौटे से  
 अन्तर के सत्य को ढाके रहना होगा  
 पत्नी ये बातें छोड दो  
 मकचय हा, मेरे मन को सी बिच्छू डस रह  
 बाकी श्री' उसका फिलयास अभी जीवित है  
 यह तुम जानती होगी ?  
 पत्नी पर उनके जीवन का पट्टा तो नहीं लिखा



मकबेय      यही सन्तोष है, वे भी तो बध्य हैं  
 सब तू प्रसन्न हो  
 इसके पहले कि पेड़ पर लटका चिमगादड़  
 उड़ निकले रात की सबर देन  
 भीषणतम वृत्त्य एव होवगा  
 पत्नी      सो क्या है ?  
 मकबेय      तू मेरी लाडली, उससे अनजान रह  
 हाँ, तू जब जानेगी भ्रान्ति होवेगी  
 आ, आधी रात दिवस की मलीन आँखा पर  
 आ, पट्टी बाँध दे  
 जिस जीवनसूत्र के झटूट बने रहने से  
 मेरा मन अस्त है  
 आ अपने क्षीणित-प्यास अदृश्य हाथों से  
 वह भाषा तोड़ दे  
 कुहरा महराता है  
 बीवा बसेरे की खोज म जाता है  
 दिन के अम्लान कुसुम सहसा कुम्हलाते हैं  
 निशचर अब हेरेंगे अपने अपने गिकार  
 विस्मय मत कर मेरे शब्द पर, धीरज घर  
 पाप किये से ही मिलते हैं फल पाप के  
 आ मेरे सग आ ।

प्रस्थान

१

### अंक 3 दृश्य 3

जंगल की एक पगडण्डी जा उस राजकीय उपवन  
के द्वार तक जाती ह जा महल से कुछ दूर है ।  
दोनों हत्यारे आत है, पीछे एक तीसरा है

हत्यारा 1 तुम्हे किसने भेजा है ?

हत्यारा-3 मैकवेय ने

हत्यारा 2 अविश्वास मत कर कि यह हम बताता है  
हमको क्या करना है  
वैसे ही जैसे निर्दोष था

हत्यारा 1 तब तू भी साथ आ  
पश्चिम में भिलमिल है आभा सूर्यास्त की  
पथ में विलमा यानी आतुर हो उठता है  
जल्दी आये पडाव  
और पास आता है हम लोग का शिकार

हत्यारा 3 सुन—घोड़े की टाप

बाँको दूर से

रोशनी दिखाओ रे

- हत्यारा 2 वही है—  
बाकी आर्मा नत दरबार म पहुच चुके  
हत्यारा 1 उसके घोडे गये  
हत्यारा 3 एब मील के लगभग जायेंगे  
पर वह औरो जैसा  
राजद्वार तक पैदल जाता है

बाको ओर पिलयास का मशाल लिये हुए प्रवेश

- हत्यारा-2 वह देखो रोशनी  
हत्यारा 3 वही है—  
हत्यारा 1 होशियार  
बाको आज रात बरसेगा  
हत्यारा 1 तो बरसे

पहला हत्यारा मशाल बुझा देता है ओर दूसरा  
बाको पर हमला करता है

बाको हाय, विश्वासघात,  
भागो वेटा पिलयास, भागो भागा भागो  
मेरा बदला लेना—हाय, नीच

मरता है पिलयास भागता है

- हत्यारा 3 किसने मशाल गुल की ?  
हत्यारा-1 क्या—नही करनी थी ?  
हत्यारा 3 सिफ एक खतम हुआ और पुत्र बच निकला  
हत्यारा 2 आधे से अधिक काम रह गया  
हत्यारा 1 खर चले जो किया है उसकी खबर दें

प्रस्थान

### अध्याय 3 दृश्य 4

महल का बड़ा कमरा । पीछे की ओर एक चबूतरे पर जिसके दायें बायें दो दरवाजे हैं दो सिंहासन तथा सामने की ओर बड़ी मेज और बठने के आसन । भोज सजा हुआ है । मकरध, पत्नी, रोस सनाकम और अन्य सामंत और अनुचर साथ साथ आते हैं

मकरध    आइए विराजिए, अपने अनुक्रम के अनुसार पति म  
आदि से अंत तक सबका हार्दिक स्वागत  
सामंत    महामाया, धन्यवाद

पत्नी को मकरध चबूतरे पर ले जाता है सामंत बड़ी मेज के दोनों ओर बैठते हैं । सिरे पर एक आसन खाली छोड़ देते हैं

मकरध    मिले जुलेंगे सबसे आज हम  
आतिथेय जो ठहरे

पत्नी सिंहासन पर बैठती है

मकबध सिंहासन पर शोभित है देवी  
 समय गये उनकी भी सगति की प्राथना करेंग हम  
 पत्नी मेरी ओर से कृपया  
 मिथो को जतला दें मेरे मन का उछाह  
 सबका सुस्वागतम्

मकबध जब बायें दरवाज क पास से गुजरता है तो  
 हत्यारा / वहाँ प्रकट होता है । सामन्त उठकर  
 मकबध पत्नी का अभिवादन करत है

मकबध देखो, वे उत्तर मे ध-यवाद करते हैं  
 पक्ष दो बराबर हैं  
 मैं यहाँ मध्य मे बैठूंगा  
 रूलकर आनन्द करो, चलने दो एक दीर

द्वार पर जाता है

मकबध तेरे चेहरे पर खून है  
 हयारा तो वह बाकी का है  
 मकबध बेहतर है वह तेरे तन पर है उसके तन मे नहीं  
 क्या उमे ठिकाने पहुचा दिया ?  
 हत्यारा उसकी गरदन प्रभुवर, चाक है  
 मैंने ही की  
 मकबध तू गरदनमारो मे वीर है  
 पर जिसन वध किया पितयास का  
 वह भी इव वीर है  
 यदि तूने ही किया तो तू है परमवीर  
 हत्यारा महामहिम पितयास बच निकला  
 मकबध पुन प्रवत होता है तब मेरा सन्ताप  
 अब तक मैं शीतल था, दह था चट्टान सा  
 पूष था

मुक्त और निवृत्त या मैं गभीर सा  
 पर भव मैं घिर गया कोटर में बंद हुआ  
 शील दिया मुझको दुश्चिन्ता न  
 बावो तो ठीक है ?  
 हयारा बावो सुरक्षित है साईं में पड़ा हुआ  
 सर पर है दोस घाव  
 जाम से हर बार्द काफी है  
 मक्खन धम्मवाद  
 साँप मरा, बच निकला साँप का सोंपोला जो  
 उमम भवसर पाकर होगा यिप का बिनास  
 दन्तहीन भाज है  
 जा तू, बल भ्रमन फिर सुनेंगे, जा  
 पत्नी ह राजन, आप क्यों रुक गय, पीजिए  
 भोज प्रीतिभोज नहीं बाजारू खाना है  
 यदि उसम प्रीति बार बार प्रकट हो नहीं  
 उदरभरण है केवल, यह तो ज्योनार नहीं  
 और अपने अपने घर पर भी हो सनता है  
 आप मोन मत रहिए  
 अपने अतिथिया का करिए मनोरंजन

बाको का प्रत आकर मक्खन के लिए निर्दिष्ट  
 स्थान पर बैठता है

मक्खन मधुरे, यह भली याद दिलवायी

अतिथियों से

जीमिए महानुभाव  
 इच्छा हो, रुचि हो जठराग्नि हो एवं आरोग्य हो ।  
 लेनाकत महामहिम, आसन ग्रहण करें  
 मक्खन भाज यहाँ राज्य का सुसज्जित गौरव होता  
 यदि आया होता हमारा सौम्य बाको

बाकी का न आना मैं वजनीय अबहला मानूंगा  
 क्षम्य देवयाग नहीं  
 रोस उसकी अनुपस्थिति, प्रभु वचनभंग है उसका  
 आप कृपा कर हमको अपन सत्सग म सम्मानित कीजिए  
 मकबध पगत तो पूरी है  
 लेनाक्स यहा एक आसन रख छोडा गया है, प्रभु  
 मकबध कहा ?  
 लेनाक्स यहा राजेश्वर  
 महामहिम, क्या विचलित हात है ?  
 मकबध यह—तुममे से किसकी करतूत है ?  
 अतिथि क्या ? महामहिम ?  
 मकबध तू क्या कह सकता है ? कुछ नहीं बिया मेरे हाथो ने  
 मत ये लोहूलुहान केश हिलाकर निहार

पानी खडी हो जाती है

रोस भद्रलोक, उठिए राजेश्वर अस्वस्थ हैं  
 पत्नी सिंहासन स उतरकर आती हुई  
 बैठिए न, सज्जनो  
 ऐसा स्वामी को जब तब होता रहता है  
 और युवावस्था से ही होता आया है  
 मुनिए, बैठे रहिए  
 क्षण भर म वह फिर पहले से हो जायेंगे  
 आप उधर ध्यान न दें  
 अधिक देवन मे वह और अस्तव्यस्त होंगे  
 और अधिक उत्तेजित  
 जीमिए, उह छाड दीजिए  
 क्या तू मद है ?  
 मकबध हाँ, ओ' निर्भीक मद  
 जिसकी आँखा म  
 वह दृश्य सहन करने का  
 साहस है  
 जो कि स्वयं शैतान दस नहीं सकता है

पत्नी मायावी इद्रजाल—

यह तरी कातरता का ही प्रतिबिम्ब है  
यह वही छुरी है जो तूने तब टंगी हुई देखी थी निरबलम्ब  
और तूने कहा था कि डकन की आर तुझे ले गयी  
चौक चौक उठना यो  
जैसे सचमुच भय हो  
मुन मुताये किस्से कहती औरतो को मुहाता है  
तुझे नहीं  
शम खा, क्या ऐसे चेहरे बनाता है ?  
देख शात हो करके  
तू खाली आसन को घूरता तडा ह  
मकचय देख देख, वहा देख, इधर ताक, तू मह क्या कहती है ?  
मैं क्या डरन लगा  
जब कि तू न हिलता है और न ही बोलता  
यदि कब्रा और समाधियो मे रखे मुर्दे उठ उठ लौटने लगे  
तो हमको गिद्ध पालन होंगे  
और उनकी बिष्ठा ही हमारा स्मारक होगी

प्रत लाप हो जाता ह

पत्नी तू पीरप सो बठा है अपनी मति खोकर  
मकचय मैं यहा खडा हू तो मने देखा भी है  
पत्नी गम खा  
मकचय रक्तपात हाता रहा है अतीत मे  
जब कि नियमबद्ध नहीं था शान्तिप्रिय समाज  
पीछे भी हत्याएँ हुई है कि जो कही नहीं जाती  
किन्तु यही होता था कि शिरोच्छेद होने पर  
मर जाता था मनुष्य, गैप हो जाता था  
किन्तु आज, आज वह पुन उठकर आता है  
खाड़े के बीस घाव गीश पर लिये हुए  
और हम आसन पर बैठन नहीं देता  
यह हत्या से भी भयावह है

बरनम



पत्नी    मकबेथ की बाह धूँकर  
 राजेश्वर, बन्धु बाट जोह रहे  
 मकबेथ    भूल गया था मैं यह  
 मेरे सज्जन मित्रों, वित्तित मत होइए  
 मेरा विचित्र एव रोग है  
 जो मेरे परिचित हैं वे जानते ही हैं  
 आइए, प्रीति हो, चिरायु हा  
 प्याला दो भरकर दो  
 फिर मैं भी बैठूँगा

जब प्याला उठाता हूँ तो प्रेत मकबेथ के पीछे के  
 आसन पर फिर प्रकट होता है

आप जो उपस्थित हैं, उनको शुभकामना  
 श्री' प्यारे बाको को भी जो है नहीं  
 होता तो कितना अच्छा होता  
 सबको शुभकामना  
 अतिथि    हम प्रतिबद्ध है अपित है

मकबेथ अपने आसन पर आना चाहता है

मकबेथ    हट जा, नज़रा से ओभल हा जा  
 घरती म समा जा  
 तेरी हड्डियों में गुदा नहीं  
 तेरा खून ठण्डा है ।  
 इन आँखों में जिनसे बाधे हैं टफटकी  
 कोई प्रतीति नहीं  
 पत्नी    यह इनकी आदत है और कुछ नहीं समझें सज्जनो  
 हा, मजा बिरकिरा तो बर ही देती है  
 मकबेथ    जो मनुष्य के बस का है वह बर सकता है  
 आ तू घर सिंह रूप गैण्डा बन शूकर बन  
 कोई सा रूप धार यह बोला छोड़कर

फिर मेरी दृढ़ता का जाच ले  
 या फिर जीवित हो जा श्रीर खडग लेकर आ  
 तब यदि कापू ठिठकू तो कह मुझको कायर  
 हट जा, भयवारी छाया, मायाधर मिथ्या, दूर हो

प्रत लाप हा जाता है

पत्नी लो, उसके जाते ही मैं फिर से स्वस्थ हुआ  
 तूने तो रगमग कर दिया, सभा व्यथ कर डाली  
 अदमृत अस्थिरता से  
 मकबध क्या ऐसी होती है वस्तुएँ ?  
 श्री एकाएक बदली सी घिर आ सकती हैं ?  
 तू तो मुझमें विचित्र अनुभव उपजाती है  
 मैं अपन से ही अनजान हुआ जाता हूँ  
 जब कि दखता हूँ मैं  
 तू ऐसे दृश्य देखाकर भी अस्थिर नहीं  
 तेरे गाला की लालिमा उतर नहीं जाती  
 जब कि मैं सफेद हुआ जाता हूँ  
 रोस कौन दश्य महामाय ?  
 पत्नी विनती है कुछ न कह  
 श्रीर विगडती जाती है इनकी दशा प्रश्न पूछे से  
 ओधित हो उठते है  
 अच्छा, अब नमस्कार  
 जाने मैं अपने अनुक्रम को भूल जायें  
 तुरत जायें  
 लेनाक्ष नमस्कार, क्षेम हो, महाराज स्वस्थ हो  
 पत्नी सबको शुभकामना

जात हैं

मकबध खून माँगता है खून श्री' लेकर रहगा खून  
 प्रकृति में सबकुछ सम्बद्ध है

पत्थर हिल उठत हैं, वृक्ष बाल गहत हैं  
 श्री हत्या सगृति म छिपी नहीं रहती है  
 अब किननी रात गयी ?

पत्नी पो फटनेवाली है

रात और दिन म मघप है

भक्तवध कयो, तू क्या कहती है ?

मेरे बुलवान पर क्या नहीं मँकडफ

आन को राजी है ?

पत्नी क्या बुलवा भेजा है ?

भक्तवध अभी नहीं, पर मैं सुना है

कि वह ऐसा कहता है

अब बुलवा भेजूगा

उसके घर म मैं रख छोडा है अपना भेदिया

बल जाऊँगा डाइन वहना स मिलने को

उह बोलना हागा आग की बात, कयोकि

मैं तुल गया हूँ अब घुरे से घुर ढव से

वह जानने को जो घुरे म घुरा हो

मरे हित पहले हैं बाकी सब गीण हैं

लोहू म डूब चुका हूँ इतना

परना न चाहूँ तो लीटना जटिल है

जस आग जाना

मरे मन मे कितनी अनजानी बातें उठ आयी है

पहले उनको कहूँ

पीछे पहचानूँगा क्या किया

पत्नी तू आत्मा के सुख का, निद्रा का भूषा है

भक्तवध आ, हम चलकर सोयें

मेरी यह घबराहट शुरु शुरु के भय के कारण है

यह अति अभ्यास से सहज होगी

कम बहुत कम किये है हमने तो अब तक

प्रस्थान

### अंक 3 दृश्य 5

लेनाक्स और अन्य एक सामंत का प्रवेश

लेनाक्स घटनाक्रम कितना विचित्र है—  
डक्न को मैकबेथ पर स्नेह था  
तो, वह मारा गया,  
बाको अंधेरे में निकला  
तो आप कह सकते हैं  
उसकी पिनयास ने खत्म किया  
क्योंकि वह, पिनयास भी, फरार है  
देखा ! अंधेरे में चलने का नुकसान !  
मैलकम, डोनालबेन का अपना बाप को  
मार डालना कितनी बुरी बात है बोलो  
मैकबेथ का कितना आघात लगा  
उसने तभी तो शराब के गुलाम रक्षका का  
बध कर डाला  
कितना अच्छा किया  
और ठीक ही तो है  
जब वे कुकर्म को अपने नकारते

तो सुनकर सज्जनगण वित्तने प्रोषित हात  
 मेरा तो बहना है भैरवधेय  
 राजकाज करता है भलीभाँति  
 डबनसुत यदि उसके बन्धे म होते  
 —श्री' प्रभु की अनुकम्पा है कि वे वही और हैं—  
 पितृघात का फल दाना चपने को पाते  
 हे ईश्वर, झूठी वनवतियो  
 श्री' अत्याचारी के घर भोज में न जाने मे  
 मैकडफ बना है पात्र राजा के कोप का  
 आप कह सकते हैं कि वह वहाँ छिपा होगा ?  
 डबनसुत, जिनका अधिकार लिये बैठा है भ्रयायी  
 दूर देश में हैं श्री मैकडफ भी वही गया  
 अथ शक्तिया का संग्रह करने जिनके सम्बल से  
 फिर एक बार हम रोटी तोड़ सकें शांति से  
 राता को सो सकें  
 भोजो, जेवनारा को खूनसने छूरो से मुक्त करें  
 निदल्ल सम्मान निष्पट पायें  
 आज इन्हीं को हम तरसते हैं ।  
 भवधेय यह जानकर इतना विक्षुब्ध है कि  
 लडने की तैयारी करता है  
 क्या उसने मैकडफ को घर से बुलवाया था ?  
 सामंत मैकडफ के पास जब राजा का चर पहुँचा  
 उसने उत्तर दिया कि मैं नहीं आने का  
 लेनाकस मैकडफ, तू दूर रह कि यही बुद्धिमानी है  
 कोई कष्टना करके जा उसको समझाये  
 ताकि पाप से पवित्र हाथा की करनी से  
 दुखियारा देश यह हमारा स्वाधीन हो  
 सामन्त मैं उसको अपनी शुभकामना पठाता हूँ

प्रस्थात

चौथा अंक



## अंक 4 दृश्य 1

तीनों डाइनें मत्तोन्धार कर रही हैं

- डाइनें    क्षीतीज के बीच, बीचोबीच आल मीच  
तू भूत हो फूत्कार स्फीत भीत चीत्कार क्लेश गुम्फित हा  
मुण्डन डप  
गूजन भन भन दुप  
विल कल कला हीन  
शांती धुप हा
- मकवेथ    अधियाली रात मे रहस्यमयी डाइनो  
तुम क्या कर रही हो—?
- डाइन    ऐसा कुछ जिसका कुछ नाम नहीं
- मकवेथ    तुमको, तुम्हारी विद्या को चुनौती है चाहे जो विद्या हो  
उत्तर दो  
हहरात अघड उमुक्त करो  
टूट पडें वे देवस्थाना पर  
खोले मुह क्षुब्ध नीलसिंधु मी' जहाजो को लील जाय  
पट जायें हरीमरी फसलें, तरु उखड जायें  
दुग अपने रखवालो के सर पर आ दहे



विराट सौध श्री' गोपुर के ललाट भुकेँ, आ लगेँ  
 अपनी नीब से  
 निसर्ग के समस्त बीज लौटपीट जायें  
 सड़ जाय सृष्टि  
 तुम मुझको उत्तर दो मेरी जिज्ञासा का

डाइन-1 पूछ, पूछ

डाइन-2 बोल, बोल

डाइन-3 हम उत्तर देंगे

डाइन 1 तू हमसे सुनना चाहेगा या प्रेतों से ?

मकबेथ वुलवाग्रो, उनको भी देखू मैं

डाइन-1 सूअरनी नौ बच्चा की खाय

रक्त उसका कोई ले आय

मेद जो सूली पर से चुए

अग्नि मे दे, स्वाहा हो जाय

गरज पहला प्रत, शिरस्त्राणयुक्त मुण्ड जो मकबेथ  
 का सा है, प्रकट होता है

मकबेथ बतला, अघात शक्ति

डाइन 1 वह तेरे अन्तर की जाने है

सुन उसके शब्द और बोल मती

प्रत 1 मकबेथ, मकबेथ, मकडफ से बचो

मकबेथ तू जो भी है तूने मेरा भय पहचाना

चेताया, धन्यवाद, टुफ ठहर

डाइन-1 नहीं नहीं, न रोक उसको

और देख, उससे भी प्रबल प्रेत !

गरज : एक रक्तरजित शिशु का प्रवेश

प्रत-2 मकबेथ, मकबेथ, निदय बन, निभय बन  
 अविचल रह

हंस करके टाल दे अपने पर आक्रमण

क्योंकि तू नारी के जने किसी मानव के

हाथो मारा नहीं जायेगा

मकबय तब मक्डफ, जी जितना चाहे जी  
 मुभवो तरा क्या डर  
 फिर भी मैं होनी से लिखवाकर ले लूंगा  
 'तू नहीं रहगा'  
 मैं पीले चेहरेवाले डर से वह पाऊंगा  
 'तू असत्य कहता है'  
 और कड़की मिजली में भी सो पाऊंगा

गरज तीसरा प्रत, मुकुटधारी शिशु हाथ में हरा  
 चक्ष

मकवेय यह क्या है, दिखता है राजकुवर मुकुट धरे  
 सब डाइनें सुन, बेचल बोल मती  
 प्रेत-3 बन कठोर, अभिमानी  
 भूल जा कि कोई चिढ़ता है करता है आलोचना  
 होते पड़्यत्र हो, होने दे  
 जब तक उठकर बरनम बन आयेगा नहीं  
 डजिनन पवत पर  
 तब तक राजा मकवेय हार नहीं सकता है

लाप हा जाना है

मकबय ऐसा होगा नहीं  
 जगल को कौन उठा सकता है ?  
 तरु को आदेश कौन दे सकता है  
 कि भूमि में पंछी जड़ अपनी छोड़ दे ?  
 यह शुभ है समाचार  
 दबे रहो, कब में पराजित विद्रोहियो,  
 प्रतीक्षा करते रहो,  
 बरनम के उठने की,  
 अभिमानी मकवेय राज करे,  
 जीवन की, काल की, समाज की करे सेवा

पर मेरा मन व्याकुल और जानने को है  
 दोलो, क्या तुमसे बताने की क्षमता है  
 कि बाको के पुत्र  
 कभी राज करेंगे भू पर ?

सब डाइन      और जान मत मैंकवेथ  
 मकबथ      ठीक है, न बतलाओ  
 शापग्रस्त होग तुम  
 बतलाओ

डाइन 1      दिखलाओ

डाइन 2      दिखलाओ

डाइन 3      दिखलाओ

सब डाइनें      दिखलाओ इसको, दुखन दो इसका दिल  
 छाया सी आओ ओ' हो जाओ ओमिल

आठ राजाओ को छायाएँ एक क बाद एक आती  
 हैं, अन्तिम क हाथ में प्याला है और सबके अन्त में  
 बाको का प्रत आता है

डाइनें      तू क्या प्रवाक है मैंकवेथ  
    गाती बजाती हैं और चली जाती हैं  
 मकबथ      गयी ? वहाँ ? जाने दो,  
 रहने दो लिखी हुई कालपत्र पर यह मनहूस घड़ी  
 कौन है ? चले आओ ।

### लेनावस का प्रवेश

लेनावस      आया हो  
 मकबथ      क्या तुमने देखी थी डाइनें ?  
 लेनावस      जी नहीं  
 मकबथ      जायें जिस पथ से वह दूषित हो  
    उनका विश्वास करे जो वह अभिशप्त हो  
    घोड़ी की टाप सुनी थी मैंने ? कौन था ?



पर मेरा मन व्याकुल और जानो  
 बोलो, क्या तुमने बताने की क्षम  
 कि बाको के पुत्र  
 कभी राज करेंगे भू पर ?  
 सब डाइनें और जान मत मैकवेथ  
 मैकवेथ ठीक है, न बतलाओ  
 शापग्रस्त होंगे तुम  
 बतलाओ  
 डाइन 1 दिखलाओ  
 डाइन 2 दिखलाओ  
 डाइन-3 दिखलाओ  
 सब डाइनें दिखलाओ इसको, दुखने दो इसका  
 छाया सी आओ भौ' हो जाओ ओ

बाठ राजाओं की छ  
 हैं अंतिम क हाथ म  
 बाको का प्रत धाता

डाइनें तू क्या प्रवाक है मैकवेथ  
 गाती बजाती हैं और  
 मैकवेथ गयी ? कहा ? जाने दो,  
 रहने दो लिखी हुई कालपत्र पर यह  
 कौन है ? चले आओ ।

लेनाक्स का प्रवेश

लेनाक्स आज्ञा हो  
 मैकवेथ क्या तुमने देखी थी डाइनें ?  
 लेनाक्स जी नहीं  
 मैकवेथ जायें जिस पथ से वह दूषित हो  
 उनका विश्वास करे जो वह अभिशप्त  
 घोड़े की टाँप सुनी थी मैंने ? कौन ।

रोस मेरी अच्छी बहन  
 शांत हो  
 सज्जन है तेरा पति और मतिवान है  
 वक्त का उतारचढ़ाव जानता है वह  
 और अधिक क्या कहूँ  
 आज समय ऐसा है कि हम देशद्रोही हैं  
 और हमें पता नहीं  
 कि भय के मारे यकीन अफवाहों पर हम कर लेते हैं  
 और जानते नहीं कि वह भय किसका भय है  
 सागर की उद्वेलित और उग्र लहरों पर  
 उतराते डोलते थपड़े खाते हैं हम  
 मैं चलूँ  
 देर करूँगा नहीं, जल्दी ही आऊँगा  
 प्यार उतर जायेगा, या फिर चढ़कर सबकुछ  
 पहले जैसा ही कर जायेगा  
 मेरी प्यारी बहन, शुभाशीष  
 इसका पिता है और यह पितृहीन है  
 जो मैं बिलमा रहा तो भारी भूल होगी  
 मेरे रोके न रुकेगे आसू, चित्त दुखेगा तेरा  
 मैं तुरंत जाता हूँ

### प्रस्थान

मकड़फ-पत्नी वेटे, तेरा पिता नहीं रहा  
 अब क्या करेगा तू, कैसे जियेगा ?  
 पुत्र जैसे चिड़ियाँ जीती हैं, माँ  
 मकड़फ पत्नी क्या ? कीड़ों मकड़ों के आसरे  
 पुत्र जो भी मिल जाये उनकी ही तरह से  
 मकड़फ-पत्नी मेरे बच्चे, डरना मत कभी  
 लासे से, जाल से  
 पुत्र मैं क्यों डरूँगा माँ ?  
 ये छोटी चिड़ियों के लिए नहीं होत हैं  
 चाहे जो कहो, भरा नहीं है मेरा पिता

## अंक 4 दृश्य 2

फाइफ, मकडफ का दुग । मकडफ-पत्नी अपने  
बच्चे और रोस के साथ भाती है

मकडफ-पत्नी	उसने क्या किया था कि देश छोड़ना पड़ा ?
रोस	धीरज मत खो, बहन
मकडफ पत्नी	उसने तो खो दिया
	पागलपन था उसका भागना
	दोपी जो कम से नहीं है वह
	दिखता है दोपी भय करने से
रोस	हम क्या जानें कि वह विवेक था कि भय था
मकडफ पत्नी	क्या ? विवेक ? पत्नी को छोड़कर, बच्चों को छोड़कर
	जमाजया घरदुआर असुरक्षित छोड़कर पलायन विवेक है ?
	प्यार नहीं था उसको
	वात्सल्य हीन है
	पिढ़ी भी पलटकर बार करती है
	जब उल्लू घोसले पर हमला करता है
	भय ही सब कुछ था और प्रेम कुछ नहीं था ?
	किसी भाति सगत नहीं जो पलायन था उसमें कसा विवेक ?

रोस मेरी अच्छी बहन  
 शांत हो  
 सज्जन है तेरा पति और मतिवान है  
 वक्त का उतारचढ़ाव जानता है वह  
 और अधिक क्या कहूँ  
 आज समय ऐसा है कि हम देशद्रोही हैं  
 श्री' हमें पता नहीं  
 कि भय के मारे यकीन अफवाहों पर हम कर लेते हैं  
 और जानते नहीं कि वह भय किसका भय है  
 सागर की उद्वेलित और उम लहरों पर  
 उतराते डोलते थपड़े खाते हैं हम  
 मैं चलूँ  
 देर करूँगा नहीं, जल्दी ही आऊँगा  
 ज्वार उतर जायेगा, या फिर चढ़कर सबकुछ  
 पहले जैसा ही कर जायेगा  
 मेरी प्यारी बहन, शुभाशीष  
 इसका पिता है और यह पिटृहीन है  
 जो मैं बिलमा रहा तो भारी भूल होगी  
 मेरे रोके न रुकेंगे आसू चित्त दुखेगा तेरा  
 मैं तुरंत जाता हूँ

#### प्रस्थान

मकड़फ-पत्नी बेटे, तेरा पिता नहीं रहा  
 अब क्या करेगा तू, कैसे जियेगा ?  
 पुत्र जसे चिड़िया जीती है, माँ  
 मकड़फ पत्नी क्या ? कीड़ों मक्खों के आसरे  
 पुत्र जो भी मिल जाये उनकी ही तरह से  
 मकड़फ-पत्नी मेरे बच्चे, डरना मत कभी  
 लासे से, जाल से  
 पुत्र मैं क्यों डरूँगा, मा ?  
 ये छोटी चिड़ियों के लिए नहीं होते हैं  
 चाहे जो कहो, भरा नहीं है भरा पिता



मकडफ पत्नी नही वह नही रहा  
 वसे बिना बाप के रहेगा तू  
 पुत्र क्या मेरा पिता देशद्रोही था ?  
 मकडफ पत्नी हा, वह था  
 पुत्र कौन देशद्रोही कहलाता है ?  
 मकडफ पत्नी भूठ बोलता है जो औ कसमे खाता है  
 पुत्र जो ऐसा करें देशद्रोही कहायेंगे ?  
 मकडफ पत्नी जो ऐसा करे देशद्रोही कहायेगा और दण्ड पायेगा  
 पुत्र क्या जा कसमे खायें और भूठ बोलें वे सभी दण्ड पायेंगे ?  
 मकडफ पत्नी उनमे से एक एक  
 पुत्र कौन दण्ड देवेगा ?  
 मकडफ पत्नी जो है ईमानदार, और कौन ?  
 पुत्र तब भूठी कसमे खानवाले मूख हैं  
 क्याकि भूठ बोलने औ कसमे खानवाले इतन अधिक  
 है कि ईमानदारा की मरम्मत करके रख दें

सदेशवाहक आता है

सदेशवाहक सुखी रह आप, आप मुझे नहीं जानती  
 यद्यपि मैं आपकी महिमा से परिचित हूँ  
 मुझको आशका है आप पर कोई सकट  
 अभी अभी आनेवाला है  
 मेरी मारें और आप यहा नहीं रहे  
 बच्चो को लेकर के निकल जायें  
 आपको डराना यो मुझे एक क्रूर बम लगता है  
 हानि पहुचाना तो बबरता होगी  
 और वह सन्निकट है  
 ईश्वर रक्षा करे

प्रस्थान

मकडफ-पत्नी      जाऊँ तो कहा जाऊँ  
 मैंने किसी का बुरा नहीं किया  
 हा, मुझे याद आया  
 कि मैं जिस दुनिया में हूँ  
 वहाँ बुरा करना है बहुधा प्रशसनीय  
 और भला करना आत्मघाती कहाता है  
 तब क्यों मैं नारीमुलभ शब्द यो कहूँ  
 कि मैंने किसी का बुरा नहीं किया है  
 ये चेहरे कौन हैं ?

हत्यारे आते हैं

हत्यारा      तुम्हारा पति कहा है ?  
 मकडफ पत्नी      जहाँ कहीं हो वह इतनी कुत्सित जगह नहीं  
 कि तुम जैसे लोग वहाँ पहुँच जायें  
 हत्यारा      वह देशद्रोही है  
 पुत्र      झूठ बोलता है तू नीच दुष्ट  
 हत्यारा      क्या कहा

मारता है

पुत्र      मुझे मार डाला मा, तू अपनी जान बचा

मर जाता है

मकडफ पत्नी 'घून-घून' कहती हुई भागती है घोर  
 हत्यारे उसका पीछा करते हैं

### अंक 4 दृश्य 3

मलकम आओ, कोई निजन सी छाह खोजकर हम अपना दुखड़ा एक दूसरे से कह ले ।

मकडफ क्यों ? शस्त्र क्यों न हाथो म लें और अपना दुखी देश उद्धारें ? अब हर दिन सूरज उगने पर नयी विधवाओं का विलाप और अनाथ शिशुओं का नन्दन सुन पड़ता है । आकाश नयी नयी विपदाओं से आहत होकर चीत्कार करता है मानो स्वदेश के दुख से वह भी दुखी हो ।

मलकम मैं इसका प्रतिकार करूँगा, वह समय आयेगा और मित्र साथ होंगे किंतु यह तो कहो कि यह आयायी, आज जिसका नाम लेते हमारी जीभ पर छाले पड़ते हैं, क्या कभी दयानु माना जाता था ? तुम तो उसके प्रिय थे और उसने अब तक तुम्हारा प्राण नहीं लिया । मैं इतना बड़ा नहीं पर इस योग्य तो हूँ कि मेरे बदले में तुम उससे कुछ पा लो और तुममें एक दुबल अबोध बकरे को क्रुद्ध देवता पर बलि चढ़ाने की बुद्धि भी है ।

मकडफ मैं कपटी नहीं हूँ ।

मलकम किंतु मकबेय है । कोई शीलवान भी राजसी क्रोध से कुछ बर डात सकता है । सुनो, मैं समझ नहीं पाता हूँ कि तुम क्या हो

और क्यों अपना देश और घरबार छोड़ चले आये हो। मुझे सदेह होता है।

**मकडफ** मैं हताश हो चुका हूँ। अत्याचार, अपना साम्राज्य फँसा, मेरे देश का रक्त बहने दे क्योंकि सज्जनता तेरे प्रतिरोध का साहस नहीं करती है। वह तेरे नाम से डरती है। महानुभाव, आपका मंगल हो। मैं वह दुष्टात्मा नहीं हूँ जो आप मुझे समझे हैं। अत्याचारी के चमूल में दबी हुई समस्त भूमि और दूर देशों से छीनी हुई उसकी सम्पत्ति भी मुझे डिगा नहीं सकती।

**मलकम** मेरी बात का घुरा मत मानो। मैं यह नहीं कहता कि मुझे तुमसे भय है। मैं भी जानता हूँ कि मेरा देश पापी के जूए तले पिसता है, उसकी आँखें आसूभरी और गरीर घायल है और हर दिन वह एक और घाव खाता है। मैं यह भी जानता हूँ कि इस अत्याचार के विरुद्ध हजारों हाथ उठेंगे और एक दिन हम अत्याचारी का सर कुचलेंगे किन्तु जिस दिन यह होगा, मैं यह भी जानता हूँ कि उस दिन मेरा देश पहले से अधिक और अनेक विधि से, अपने नये शासक के हाथों दुख का भागी होगा।

**मकडफ** ऐसा शासक कौन होगा ?

**मलकम** मैं अपने को कहता हूँ। जानता हूँ कि मुझमें पाप के अनेक रूप इस तरह समाहित हैं कि जब वे प्रकट होंगे, पापी मैकवेथ दूध का घोंघा दिखेगा और जनता उसे मेरे अनन्त दुष्कर्मों की तुलना में देवतुल्य समझगी।

**मकडफ** रौरव नरक में भी मैकवेथ जैसा पापी नहीं होगा।

**मलकम** मैकवेथ हत्यारा होगा मानता हूँ, मानता हूँ कि वह विलासी लोलुप, मिथ्या, कपटी, छली ईर्ष्यालु और सब कुकर्मों से भ्रष्ट है जिनके कोई नाम हैं, किन्तु मेरी वासना की तो कोई चाह नहीं। तुम्हारी पत्नियाँ, पुत्रियाँ, दाइयाँ, दासियाँ सब मेरी लिप्सा की अग्नि बुझा नहीं सकती और जो मुझको रोकेगा वह जीवित रह नहीं सकता। ऐसे किसी से तो भला है कि मैकवेथ ही राज करे।

**मकडफ** निरकुश वासना अत्याचार है और उसने अनेक सिंहासन असमय में खाली कराये हैं किन्तु तुम जिस पर भी आसक्त हो उसे तुम चुपचाप बिना जतलाये माँग ले सकते हो या भी, अनेक स्त्रियाँ

होंगी जो तुम पर समर्पित होने को लालायित हो और होकर गौरवावित हो।

**मलकम** यही नहीं, मुझमें एक अत्यंत बड़ा रोग है कि मेरे लोभ की कोई सीमा नहीं। वह निब ब है और मैं किमी सामन्त की भूमि, किसी के रत्न, किमी का महल कभी भी हृदय सकता हूँ और यह मूख ऐसी है कि जितना खाता हूँ उतनी ही बढ़ती है, इसलिए मैं भलो और ईमानदारा के विरुद्ध झूठे अभियोग कर उनका विनाश करता हूँ जिससे उनका धन मेरा हो जाय।

**मकडफ** लोलुपता आत्मघाती है यह देहलिप्सा से कहीं अधिक भीषण है और इसकी जड़ वही अधिक गहरी। इस तलवार ने अनन्त राजा-म्रा को मौत के घाट उतारा है, फिर भी तुम चिन्ता न करो। तुम्हारा देग तुम्हें बहुत द सकता है और यह दोष अय गुणों की तुलना में बहुत साधारण है।

**मैलकम** पर वे गुण मुझमें हैं नहीं। राजा होने के योग्य गुण जैसे सत्य, दाय, सयम, रथय, कृपा, निष्ठा, कृणा, विनय, श्रद्धा, धीरज, साहस और दृढता मुझे अनात है। किन्तु दुष्कर्म कई कई गुण होकर मुझमें विलास करत है—हा, मुझ यदि सत्ता मिले तो मैं प्रेम के अमृत में नरक घाल डालूँ, जन जन की शान्ति को नष्ट कर दूँ और धरती पर जितनी एकाता है उसे तोड़ दूँ।

**मकडफ** मेरे देश ! मेरे देश !

**मलकम** ऐसा कोई व्यक्ति यदि शासन के योग्य हो तो कहो जैसा मैंने बताया है ?

**मकडफ** शासन के योग्य ?—वह जीने के योग्य नहीं। मेरे अभाग्य राष्ट्र ! अत्याचार से तू कब मुक्त होगा ? देख, राज्य का सच्चा उत्तराधिकारी अपने ही शब्दों में पतित और अयोग्य है। वह अपने वश का कलक है। मैलकम, तेरा पिता सत्त था, मा वत्सला थी। पर ईश्वर तेरा भला करे ! जो दुर्गुण तूने गिनाये हैं उन्हीं के कारण तो मैं देश छोड़कर आया हूँ—अब कहा जाऊँ ! बस, आशा की हल्की सी ज्योति भी बुझ गयी।

**मलकम** तेरे ये माधु शब्द सुनकर मेरा सब स देह जाता रहा। मुझको विश्वास है कि तू सच्चा वीर है। राक्षस मैकवेय ने इसी तरह के छत्र से मुझे फुसलाना चाहा था और अब मैं किसी पर सहसा

विश्वास करना नहीं चाहता हूँ। मैं तेरे साथ हूँ, तू मुझे राह दिखा, मैं अपने विषय में जो कुछ कहा था वह सच मत मान। मैंने अभी तक स्त्री को नहीं जाना भूठ कभी नहीं बोला, पराया घम नहीं ताका, कभी घम नहीं छोड़ा और विश्वासघात शैतान से भी नहीं कहूँगा। जीवन में और सत्य में मेरी आस्था है और पहला भूठ वही था जो मैंने अभी अपने घर में तुझसे कहा था। मैं जो हूँ तेरा हूँ और अपने दुखियारे देश का हूँ। हम तेरे आने के पहले ही एकत्र हो रहे थे। क्या? चुप क्या रह गये?

मकडफ ऐसी प्रिय और ऐसी अप्रिय घटनाएँ एक साथ देखकर। वह देखो कौन आता है?

### रोस का प्रवेश

आओ मेरे प्यारे भाई, देश का क्या समाचार लाये हो?

रोस हतभाग्य मातृभूमि, अपनी सूरत से वह डरने लगी है। अब वह हमारी मा नहीं रही हमारी कब्र बन रही है। वहाँ कोई, जो कुछ भी जानता है मुस्कराता नहीं है, आह और कराहें आकाश को चीरती हैं, और भीषण वेदना ही एक समान सबकी सम्पत्ति है। जब कोई मरता है तो कोई नहीं पूछता कि कौन था और जो जीत हैं वे अपने गने के हार मुरझाने के पहले मर जाते हैं।

मकडफ मेरी परनी कसी है?

रोस ठीक ही हैं।

मकडफ और मेरे सब बच्चे

रोस वे भी ठीक हैं

मकडफ पापी ने उनकी शांति में विघ्न नहीं डाला?

रोस नहीं, जब मैं चला तब वे पूरा शांति में थे

मकडफ शत्रु की कजुमी मत करो, कुछ और कहो

रोस जब मैं आया तो अफवाह थी कि कुछ और लोग मारे गये हैं, जो सही ही होंगी क्योंकि मैंने जालिम का पजा उठा हुआ देखा था।

मलकम से

अब समय आ गया है कि तुम मदद करो। तुम्हारी एक दृष्टि

देश मे सैनिका को जम देगी, औरतो को मुद्ध करना सिखलायेगी ताकि वे अपने पर आयी विपत्ति का दमन कर सकें ।

मलकम      धीरज धरो, हम आ रहे हैं ।

रोस      कहीं मैं भी कोई ऐसा शुभ समाचार तुमको दे सकता । पर मेरे पास जो शब्द है वे मरुथल मे कहने योग्य है जहाँ वे किसी कान मे न पड सकें ।

मकडफ      वे जिसके विषय मे हैं वह घटना सावजनिक है या व्यक्तिगत है ?  
रोस      ऐसा कौन सच्चा प्राणी है जो दूसरो का दुख न बँटाता हो पर यह सुगन्त तुम्हारे विषय मे है ।

मकडफ      यदि ऐसा है तो तुम शीघ्र कह डालो ।  
रोस      सुनकर तुम मेरी बोली से सदा के लिए घृणा मत करने लगना क्योंकि तुमन ऐसे विदारक शब्द कभी नहीं सुने होंगे ।

मकडफ      हूँ, कुछ कुछ समझ रहा हूँ ।

रोस      तुम्हारे दुग पर आक्रमण हुआ, तुम्हारी पत्नी, तुम्हारे बच्चे बवंर हाथो से काटे गये कस, यह वणन करना मेरे बस का नहीं नहीं ।

मलकम      हे ईश्वर—अरे बधु ऐसे मुह मत ढापो, पीडा को शब्द दो । वह वेदना जो व्यक्त नहीं होती, भयाकुल हृदय मे तडपती रहती है और उसे निदीण कर सकती है ।

मकडफ      मेरे बच्चे भी ?

रोस      हा, पत्नी बच्चे, सेवर, जो भी मिले ।

मकडफ      और मैं वहा से इतनी दूर था ? पत्नी भी ?

रोस      मैंने अभो कहा ।

मलकम      धीर धरो अपने प्रतिकार को हम इस भीषण दुख की औपधि बनायेंगे ।

मकडफ      उसके कोई सत्तान नहीं है । मेरे सब प्यारे छौने ? तुमने क्या कहा ? सब ?

मलकम      मनुष्य की तरह विरोध करो, मकडफ ।

मकडफ      कहेगा पर मुझे मनुष्य की तरह अनुभव भी करने दो ।

कौन मू न सकता है वध दिल के टुकडो का

ईश्वर तबता रहा

जबकि लिया जाता था उनसे प्रतिशोध

पिता के कारण ?

- मलयम प्रतिहिंसा के हम परपर पर तलवार को  
सान चढ़ाओ साथी  
त्रोध करो, मत बैठो मत मगोत हो प्रचण्ड  
मकडक हे ईश्वर, खीच दुष्ट मैकवय को दूर से  
खडग की पट्टन में मेरी ले आ  
फिर भी वह छूट जाय  
तो उमको दे दामा  
मैलयम पुरपोचित शब्द ये तुम्हारे हैं  
मैकवेय पा अन्तकाल आया है पास  
और देते हैं दवता हमको आशीर्वाद  
धीर धरो  
कोई रात इतनी लम्बी नहीं  
जिसका दिन ही न हो  
चलो, मुद्ध की रचना करें, चलो

प्रस्थान





पॉचवॉ अंक



## अंक 5 दृश्य 1

डजिनेन किले का एक कक्ष, चिकित्सक और  
घाई का प्रवेश

चिकित्सक मैंने दो रात तुम्हारे साथ साथ उस पर निगरानी की परन्तु तुम्हारी बात का कोई प्रमाण न पाया। पिछली बार यह कब चलती दिखी थी ?

घाई जब से महाराज युद्धभूमि को गये मैं महारानी को कई बार देखा है कि वह बिस्तर से उठती हैं दोशाला ओढ़ती हैं अलमारी खोलती हैं, कागज निकालती हैं उसे मोड़कर उस पर लिखती हैं, अपना लिखा पढ़ती हैं फिर उठे बंद कर बिस्तर पर चली जाती हैं और यह सब जब वह करती है तो गहरी नींद सोयी रहती हैं।

चिकित्सक यह तो प्रकृति की विचित्र लीला है—एक ही साथ आखें मूटने का मधुर आनन्द भी और देवने का कौतुक भी। पर यह तो कहो कि रानी को सोते सोते चलने और अथ कुछ करने के अतिरिक्त क्या कभी कुछ शब्द कहते हुए तुमन सुना है ?

घाई जी हा, किंतु मैं उनके पीछे वे शब्द कह नहीं सकती।

चिकित्सक मुझे कह सकती हो और अच्छा हो कि वह डालो।

धाई न आपसे, न किसी और से क्योंकि मैं जो बताऊँगी उसका गवाह कोई नहीं होगा ।

मकबय पत्नी का प्रवेश हाथ में दिया है

लो वह आ गयी । मैं निश्चित कह सकती हूँ कि वह गहरी नींद में हैं । ध्यान से देखो, छिपकर खड़े रहो ।

चिकित्सक इनको यह दिया कहा से मिला ?

धाई यह तो उनके समीप रखता रहता है । उनका आदेश है कि रोकनी बराबर उनके पास रह ।

चिकित्सक देखा, आखें खुली हुई हैं ।

धाई परन्तु उनकी चेतना बंद है ।

चिकित्सक अब क्या कह रही हैं ? देखो, हाथ कैसे मल रही हैं ?

धाई यह उनकी आदत है मानो हाथ धो रही हो । मैंने उन्हें कई घड़ी ऐसा ही करते रहते देखा है ।

मकबय पत्नी अभी एक धन्ना बाकी है ।

चिकित्सक सुनो, सुनो, बोल रही हैं । जो वह कह मैं उसको लिख लू जिससे कि बाद में कहीं भूल न जाऊँ ।

मकबय पत्नी निकल, अभाग धन्य, कहती हूँ निकल ! एक, दो, लो वक्त आ गया, कर डालो । क्या, नरक में अंधेरा है ! छि स्वामी, सैनिक और भय ? हमको भय हो ही क्यों ! हमसे क्या जवाबतलब कर सकता है ? हा, मुझे नहीं मालूम था कि बूढ़े की देह में इतना खून होगा ।

चिकित्सक कुछ सुना तुमने ?

मकबय पत्नी फादर के राजपुत्र के एक पत्नी थी, सो अब वहाँ है ? अरे, क्या ये हाथ अभी साफ नहीं होंगे ? बस करो, राजेश्वर, बस करो, ऐसे चौक चौककर तुम सब मजा किरकिरा कर रह हो

चिकित्सक भाग जा, भाग जा, तूने वह सुन लिया है जो तुझे नहीं जानना था ।

धाई उसने वह कह दिया है जो उसे नहीं कहना था । इसमें कोई गलत नहीं । ईश्वर जाने कि उसने क्या किया है ।

मकबय-पत्नी अभी तक खून की गंध नहीं गयी । अरब के तमाम इन इतन में हाथ को सुगन्धित नहीं कर सकता । ओह ओह ओह !

चिकित्सक      कितना गहरा नि श्वास ! हृदय क्लेश से भरा है ।  
 धाई      मैं तो ऐसा हृदय अपने सीने में कभी न रखूँ जिससे सारे शरीर  
 की गरिमा घटे ।

मकबय पत्नी      हाथो की धो डालो, रात के वस्त्र पहन लो, ऐसे पीले मत पड़ो ।  
 मैं तुमसे फिर कहती हूँ कि वाको दफन हो चुका । वह बग्न से  
 उठकर नहीं आ सकता ।

चिकित्सक      ओह, ओह, यह बात है ?  
 मकबय पत्नी      सोने चलो, सोने चलो कोई फाटक पर खटखटाता है आओ,  
 आओ, आओ मुझे अपना हाथ दो । जो हो चुका अब वह अन-  
 बिया नहीं हो सकता । सोने चलो, सोने चलो, सोने चलो ।

वह जाती है

चिकित्सक      क्या अब वह विस्तर पर जायेंगी ?  
 धाई      एकदम जायेंगी ।  
 चिकित्सक      अफवाह फली है अस्वाभाविक कम से  
 अस्वाभाविक घट ही उपजते हैं । रोगी मन  
 बहरी तकियों से अपनी व्यथा कया कहते हैं  
 बेचारी, उस चिकित्सक नहीं, ईश्वर की अनुकम्पा चाहिए  
 हे ईश्वर, हे ईश्वर हम सबको दे क्षमा  
 उसको सरक्षण दे  
 उसके सब क्लेश मिटा और उस पर दृष्टि रख  
 अच्छा अब विदा  
 धाई      विदा भला हो तुम्हारा ।

प्रस्थान

## अंक 5 दृश्य 2

डजिनेन दुग के निकट । ढोल और झण्ड । एगस और लेनाक्स का दो अन्य सामंतों के साथ प्रवेश

सामंत 1 मलकम की सेना श्री' उसके संग मैक्डफ आने ही वाले है

आग प्रतिशोध की सुलग रही है उनमे उनका आमंत्रण सुन आते हैं और भी

एगस धरनम वन के निकट हम उनसे जा मिलें उसी रास्ते से वे आते है

सामंत 2 मलकम के साथ डोनालवेन भी होगा ?

लेनाक्स नहीं है, परंतु कई और हैं कई युवा साथ है कि जिनकी तरुण्य ने कल अंगड़ाई ली है

सामंत 1 दुष्ट मैक्वेथ क्या करता है ?

सामंत-2 डजिनेन दुग की सुरक्षा का दृढ़ प्रबंध कुछ इसको पायलपन कहते है श्री कुछ, जो कम बटु हैं, कहते हैं उग्रता

पर सच तो यह है कि मैक्रेथ बीखलाया है  
 भापे से बाहर हो रहा है बट  
 एगस अब अपने हाथा पर गोपन हत्पाओ के  
 चिह्न दलता है बट  
 बार-बार बल तब के स्वामिभक्त  
 करते हैं द्रोह  
 सोग उसके आदेश पर चलत हैं इसलिए  
 कि बस वह आदेश है  
 मन से नहीं चलते  
 उसका राजत्व भूलता है यो उस पर  
 कि जैसे पडा बीने पर दैत्य का लबादा हो  
 सामन्त 1 तब उसको कौन दोष दे उद्धत होने पर  
 जब उसके भीतर जो कुछ भी है  
 अपनी ही भत्सना करता है  
 सामन्त 2 जो हो, हम बडे चलें  
 लेनाबस खलो चलें, वरनम को

प्रस्थान



### अंक 5 दृश्य 3

डजिनेन क दुग का वक्ष, मकबध, चिकित्सक और  
सामंतों का प्रवेश

मकबध    और समाचार यहा मत लाओ  
जो जायें जाने दो  
जब तक बरनम का वन  
उठ करके डजिनेन को नहीं चला आये  
मैं क्यों भय से मरूँ ?  
मैलकम— वह छोकरा—  
क्या उसको औरत ने नहीं जना ?  
प्रेतात्माएँ, जो मनुष्यों का विधिविधान जानती  
भुभसे कह गयी हैं या 'डर मत, ओ मकबध,  
कोई जो औरत का जाया हो तुम्हे हरा नहीं सकता'  
जाओ, विश्वासघातियो, जाओ  
औ कच्ची उम्र के किशोरा से मिल जाओ  
मेरा निर्णायक मन मेरा अन्त वरण  
न सशय मे ढूँढेगा न भय से थरथरिया



## सेटन का प्रवेश

मकवेथ      श्रीर क्या खबर है ?  
 सेटन      पहले जो आयी थी अब उसकी पुष्टि हुई  
 मकवेथ      लडूंगा मैं तब तलक  
                  जब तलक मेरी हड्डिया पर गोشت बाकी है  
                  मेरा कवच लाओ  
 सेटन      अभी समय नहीं आया  
 मकवेथ      मैं पहने रहूंगा  
                  घोड़े दीडाओ श्री' छान डालो गाव गाव  
                  जो भय का नाम ले पकड़ करके फाँसी दो  
                  दो मेरा कवच मुझे—

## चिकित्सक से

चिकित्सक      तेरे रोगी का क्या हाल है चिकित्सक ।  
                  वह किसी व्याधि से उताा अस्वस्थ नहीं  
                  जितना कि आधि से  
                  दुश्चिन्ताएँ उसे सोने नहीं देती हैं  
 मकवेथ      उसे कष्टमुक्त कर  
                  क्या तू उपचार नहीं कर सकता है मन का ?  
                  स्मृति से उखाड़ नहीं सकता है कोई दुख ?  
                  क्लेश की लिखावट भस्मिक से मिटा नहीं सकता है ?  
                  मीठी विस्मरणवटी देकर  
                  क्या काढ़ नहीं सकता हूँ अंतर का मलापन  
                  जिससे मन बोभिल है ?  
 चिकित्सक      यह तो रोगी के खुद करन का काम है  
 मकवेथ      श्रीपधिया फेंक दो कूड़े में  
                  मुझे नहीं चाहिए  
                  लाओ मेरा कवच, पहनाओ  
                  दो मेरा राजदण्ड  
                  (सेटन, जल्दी करो)  
                  मेरे सामान्त आज मुझसे कतराते हैं चिकित्सक ।  
                  (यह क्या कर रहे हो ?)



## अंक 5 दृश्य 4

बरनम वन के निकट का क्षत्र ढोल और शण्ड  
मलकम, मकडफ, एगस, लेनावस, रोस, अन्य  
सामंत और सैनिक आत हैं

मलकम भाइयो, वह दिन अब दूर नहीं  
जबकि नहीं सोत में हत्या का भय होगा  
सामंत 1 निश्मशय  
सामंत 2 यह जगल क्या है जो दिखता है सामने ?  
सामंत 1 यह बरनम का वन है  
मलकम हर सैनिक एक डाल काट ले  
अपने आग रखे  
इस प्रकार हम अपनी  
सट्या की शत्रु से छिपा लेंगे  
उसे घेर लेंगे देखे जाने के पहले  
सैनिक ऐसा ही होवेगा

सेना का प्रस्थान

## अंक 5 वश्य 5

हजिनन दुग के भीतर । झण्डों और ढोल के साथ  
मकजय, सटन घोर सनिक प्रवेश करत हैं

मकजय दुग की दिवारा पर ध्वजकेतन पहरा दो, आने दो  
जो वे घेरा डाले, उह पडे रहने दो  
जब तक कि भूख और रोग उह खा न जायें  
यदि उनमे मिले नहीं होते हमारे भी अनुपायी  
हम उनसे जूझते आने सामने  
मारकर उह उनके घर तक पहुँचा देत  
कैसा यह शोर है

भीतर स स्त्रियों के रोने का स्वर

सटन औरतें रोती हैं

जाता है

मकजय मैं प्राय भूल ही गया हूँ कि भय कसा होता है

एक समय था कि जब रात में चील मुन  
 खूब जम जाता था  
 दारुण कथा बोई रागटे गडे गर देती थी  
 अब मैं खुद भय के सग हमप्याला हो चुका  
 सबट से हमारा मन इतना परिचित है  
 कि और चौकता नहीं

सटन फिर आता है

सेटन महामाय, रानी अब नहीं रही  
 मकरध उन्हें किसी और समय जाना था  
 तब इन दाव्या के मानी होते  
 बल और बल और बल भी  
 घिसट घिसटकर व्यतीत होयेगा  
 शेषबाल शेष बचे रहने तब  
 बीते बल जितन हैं सबन प्रशस्त किये रास्त  
 बन्ना तब, मूढा के वास्ते  
 छोटी सी, दिय की ली, निबट जा  
 कि जीवन चलती फिरती छाया है  
 साधारण पात्र  
 जो कि खटता है पिसता है  
 मच पर  
 घड़ी भर  
 सुनायी फिर नहीं पड़ता  
 मूरख का कहा हुआ बिस्सा है जीवन  
 है गजन से तजन से भरा और अथहीन

चर का प्रवेश

तू बकने आया है जल्दी वह  
 चर महामहिम मुझको बतलाना है जो मैंने देखा है  
 किंतु जानता नहीं कि वह कैसे बतलाऊँ

भववथ कुछ तो वह  
 चर जब मैं पवत की निगरानी कर रहा था  
 तब मैंने दृष्टि की बरनम की ओर  
 तो यह लगा कि वह जंगल  
 धीरे से चल पड़ा

मकयेथ भूठा, गद्गार  
 चर यदि जो मैं कहता हूँ वह न हो तो मुझे दण्ड दें  
 तीन तीन मील तक आप देख सकते हैं  
 पास आ रहा है वह  
 जी हा, चलता फिरता

मकवथ भूठ अगर बोला है तो अगले पेट पर जिंदा लटका दूंगा  
 लटका रहेगा औ मुख से भुरायगा  
 जो सच कहा तो मुझको परवाह नहीं  
 सक्ल्य करता हूँ  
 और प्रेत की वाणी पर शका होती है  
 जो सत्य के जैसा भूठ बोलती थी यह  
 कि डर मत जब तब बरनम डज़िनेन को न आय  
 और आज वह डज़िनेन चला आता है  
 अस्त्र लो, अस्त्र लो, और चलो  
 यदि इसने जो देखा, आया है  
 तो न भागना होगा और न बिलमे रहना  
 मैं सूरज के प्रकाश से थक गया हूँ, यह मनाता हूँ  
 कि विश्व यह विमर्जित अब हो जाय  
 सतरे के घण्टे बजाओ, तूफानी, आधियो, आओ  
 हम कम से कम बवच घारे तो मरेंगे ।



## अंक 5 दृश्य 6

उजिनेन दुग क सामने का मदान, मकबथ का प्रवेश

मकबथ    यो मुझको घेर लिया, भाग नहीं सकता हूँ  
हमलावर कुत्तो से यही निबटना होगा  
कौन है कि जिसको औरत ने जना नहीं ?  
ऐसे ही व्यक्ति से मुझे भय है और किसी से नहीं

एक सनिक आता है

सनिक    तेरा नाम क्या है ?  
मकबथ    काफ उठेगा तू वह सुन करके मैं मकबेथ हूँ  
सनिक    इतना घणास्पद नाम !  
मकबेथ    इतना भयकर कह !  
सनिक    भूठे, कुत्तिसत पापी,  
मेरी तलवार अभी सिद्ध किये देती है

लडत है और सनिक मारा जाता है

मकबथ    औरत ने तुझको जना होगा

पर उन हथियारों पर मैं बेबल हूँसता हूँ  
जो कि धारते हैं नर स्त्री के जने हुए

जाता है घण्टों की आवाज़, मकड़फ का प्रवेश

मकड़फ शोर इस दिशा में है, दुष्ट सामने तो आ  
तू यदि भारा गया किसी और के हाथों  
तो मेरी पत्नी श्री बच्चों के प्रेत मुझे सालेंगे  
या तुम्हको मारेंगे  
या इस तलवार को कोरा ही  
रख दूंगा म्यान में

जाता है, घण्टे बजते हैं, मलकम और एक सनिक  
का प्रवेश

सनिक स्वामी इस ओर आये  
रण में हम जीत गये  
अत्याचारी के जन दोनों ओर लड़ते हैं  
विजयश्री आज आपकी ही है  
मलकम शत्रु पक्ष में ऐसे सनिक भी देखे थे  
जो कि हमारी खातिर लड़ते थे  
सनिक दुग में प्रवेश करें

जाते हैं घण्टे बजते हैं

## अंक 5 दृश्य 7

### मकबध का प्रवेश ✓

मकबध    आत्महत्या क्यों करूँ मैं ?  
          आज जीवित प्राणियाँ क्यों घाव तन पर सोहते हैं

मकडफ का प्रवेश, दोनों में युद्ध होता है

थक गया है तू चला जा  
रक्त से बोभिल बहुत है आत्मा मेरी  
तू भले रण में कुगल हो  
भले ही तेरा दुष्टारा वध्य वक्षा पर गिरे  
वरदान है मुझको कि मेरा प्राण  
नारी गम से उत्पन्न कोई हर नहीं सकता  
मकडफ    व्यथ है वरदान तेरा  
जा, कि वह जिसने दिया हो पूछ उससे  
वह बतायगा कि मैं कडफ  
गम माँ का चीरकर काढा गया था  
जन्मा नहीं था  
मकबध    नष्ट हो वह जीभ जो यह बोलती है

क्याकि इसन शक्ति मेरी छीन ली है  
 ओह, जाहूगरनियो पर मत कर विश्वास कोई  
 जोकि दोहरे अथ का खिलवाड करती हैं  
 एक आशा जगाती है, एक आशा तोड़ती हैं  
 मैं नही तुमसे लडूंगा

मकडफ तब फिर तू हार मान, कायर  
 देखेंगे सभी लोग तेरी मुसभरी लाश  
 और यो कहेंगे 'यह अत्याचारी देखो'

मकबध मैं न हार मानूंगा  
 मैं लकम के चरणो म गिरन को  
 और कायरा के मुह से गाली सुनने का  
 बरनम बन आया है डजिनेन  
 और सामन तू है स्त्री का जना नही  
 फिर भी मैं  
 धारण कर अस्त्रकवच अत तक लडूंगा  
 आ, जा मकडफ आ, जा  
 उसको धिक्कार है कि जो पहले 'ठहर' कह

युद्ध और मैकबध की मृत्यु



